समर युसुफ, भोपाल, म.प्र.

मिलिंदा दुभाषे, देवास, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-18 अंक-9 मार्च 2003

चकमक

सहयोग
सुशील जोशी
राकेश खत्री

भेजने का पता
एकलव्य
एच आई जी – 453
भोपाल – 462 016
(म. प्र.)
फोन : 2463380

क्या-क्या है इस अंक में..?

विशेष

10 एक तेंदुआ.....

कहानी

22 बन्दर और लोमड़ी

29 तिल से ताड़

कविताएँ

9 ऊटपटाँग

18 होली

खेल-प्रयोग

15 कागज़ का चूहा

20 सवालीराम..गर्मी में ज़्यादा प्यास क्यों?

हर बार की तरह

2 इस बार की बात

3 मेरा पन्ना

32 चित्र पहेली

36 माथापच्ची

और यह भी

26 थर्मामीटर – 3

34 पुस्तक चर्चा

28 बच्चों के अधिकार: वैलियन्ट जोन्स

38 चकमक समाचार

40 ाल समाचार

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात ..

लड़की

लड़की अंतरिक्ष में जाती
साहस इतना भारी
लड़की खेल रही खतरों से
लड़की कहीं न हारी

लड़की कलाकार होती है
कोयल के स्वर गाती
लड़की सुन्दर नृत्य दिखाकर
नए लोक ले जाती

लड़की शासन चला रही है
लेती जिम्मेदारी

वायुयान लड़की के हाथों
आसमान में उड़ते
नए नए अध्याय ज्ञान के
इससे ही हैं जुड़ते

बनती पुलिस फौज में जाती
बनती ऊँची नारी

रचती है साहित्य,वेद की
रचती यही ऋचाएँ
कोमल भावों में डूबी है
क्या इसके गुण गाएँ

नन्ही बच्ची गोदों में है
खुशियों भरी पिटारी

यह स्वतन्त्रता के संघर्षों
में भी तो थी आगे
इसका जोश देख भारत के
कितने ही जन जागे

यह प्रकाश लेकर निकली है
मिटा रही अँधियारी
लड़की अंतरिक्ष में जाती
साहस इतना भारी

डॉ श्रीप्रसाद

होली के दिन

होली का दिन था। सुबह-सुबह सात बजे मुझे मम्मी ने उठाया। मैं उठी, मुँह धोया और सफेद कपड़े पहनकर बाहर जाने को तैयार हुई। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, मेरी सारी सहेलियों ने मुझे गुलाल लगा दिया और रंग भरे पानी से भिगो दिया। यहाँ तक कि रंगीन पानी मेरे घर में भी गिर गया।

फिर हमने मिलकर एक पानी से भरी टंकी में खूब रंग मिलाया और फिर उस पानी से गुब्बारे बनाए, पिचकारियाँ भरीं, और यह सब लेकर श्वेता के घर गए। उसने भी मेरी तरह रंगीन पानी से एक टंकी भर रखी थी। हम सब एक-दूसरे को टंकी में फेंक रहे थे, एक-दूसरे के ऊपर गुब्बारे फोड़ रहे थे, पिचकारियों से रंगीन पानी मार रहे थे। प्रीति ने तो हमें सिल्वर कलर भी लगाया। उस वक्त हम बहुत खुश थे पर अगर हमें कोई देख लेता तो डर जाता क्योंकि हम किसी भूत से कम नहीं लग रहे थे। श्वेता की मम्मी ने हमें मिठाई खिलाई और फिर हम सब अपने-अपने घर गए।

घर पहुँचने पर मम्मी ने कहा, "ये तू कहाँ से आ रही है? अपनी शक्ल देख आइने में। किसी जोकर से कम नहीं लग रही है। " इस पर मेरे भैया, मेरी दीदी और मेरे पापा सब मुझ पर हँसने लगे। फिर मम्मी ने कहा कि अब हाथ धो ले और कुछ खा ले। तब मैंने कहा कि मैं खाकर आई हूँ। पहले मैं नहाऊँगी, फिर खाऊँगी। मुझे नहाने में पूरा एक घण्टा लगा। फिर मम्मी ने मुझे खाने को जलेबी दी।

थोड़ी ही देर हुई थी कि हमारे मोहल्ले की कुछ औरतें मम्मी को गुलाल लगाने के लिए आईं। मुझे मालूम नहीं था कि मेरे घर आण्टियाँ आईं थीं और मैं बाहर चली गई। उन आण्टियों ने मुझे देखा और पकड़कर पक्का रंग लगा दिया। इस कारण मुझे फिर से नहाना पड़ा। दो बार नहाने से मुझे सर्दी हो गई और हल्का बुखार भी। तब मम्मी ने मुझे गोली देकर सोने को कहा। सोने के बाद मेरा बुखार उतर गया। इस दिन को मैं अपनी ज़िन्दगी का सबसे ज़्यादा खुशी का दिन मानती हूँ।

● सुजाता, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

● सुनीता, पाँचवीं, काँकरिया, हरदा, म. प्र.

मेरा पन्ना

अपाला मिश्र, साढ़े चार वर्ष, देहरादून, उत्तरांचल

तोता

हरा-हरा तोता
डाल पर सोता
मीठे-मीठे जामुन खाता
बड़े सबेरे उड़ जाता

सोनम गुप्ता, पहली, शाहगढ़, सागर, म. प्र.

सुबह का दिन और घर की मस्ती

एक बार जब मैं स्कूल के लिए तैयार हो रहा था और मैं कपड़े पहन लिया। पूजा करने के बाद मोजे जूते पहनने के बाद मम्मी सुबह का नाश्ता लेकर आई। और मैं सुबह का नाश्ता करने बैठ गया। तभी पापा ने मुझे बोला कि बेटा मंजन कर लिया। और तभी मुझे एक झटका सा लगा। मैं थोड़ी देर सोचते रहा कि मैं मंजन करूँ या कि नहीं। तभी मैंने सोचा कि बाथरूम के अंदर जाऊँ और थोड़ी देर बाद आ जाऊँ मम्मी पापा पूछेंगे तो कह दूँगा कि मंजन कर लिया हूँ।

● आशुतोष कुमार, नवमीं, (पता नहीं लिखा)

मुहल्ले में लड़ाई

मैं मोहसिनपुरे में रहती हूँ। मुझे वहाँ बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वहाँ का माहौल बहुत खराब है। लोग जुआ-सट्टा खेलते हैं। मेरे घर के सामने एक आदमी रहता था। वह जुआ खेलता था। उसके पास जो रहता था वह भी जुआ खेलता था। उनमें बहुत अच्छी दोस्ती थी। त्यौहारों पर मिलने जाते। पर उस दिन मैं आश्चर्य में पड़ गई कि इतने अच्छे दोस्त और आज पैसों के लिए लड़ाई हो गई। मैंने उस दिन सोचा कि ऐसा पैसा किस काम का जो एक मित्र से दूसरे मित्र को लड़ा दे।

बात तो बहुत ही बढ़ गई। दूसरे दिन जो हमारे घर के सामने रहते थे, उन्हें बहुत मारा। ऐसा लगता था जैसे हमारे मोहल्ले में कर्फ्यु लग गया हो। उस दिन मैं ऐसी गम्भीर हो गई थी मानो हमारे घर में लड़ाई हुई हो। मुझे यह एहसास हुआ कि हमारे देश में रिश्तों की एहमियत ही खत्म हो गई है। मेरी ज़िन्दगी की यह पहली इतनी बड़ी घटना हुई। मुजे ऐसा लगा कि देश में दोस्ती, विनम्रता खत्म हो गई है।

● **शाहिला खान, नवमीं, (पता नहीं लिखा)**

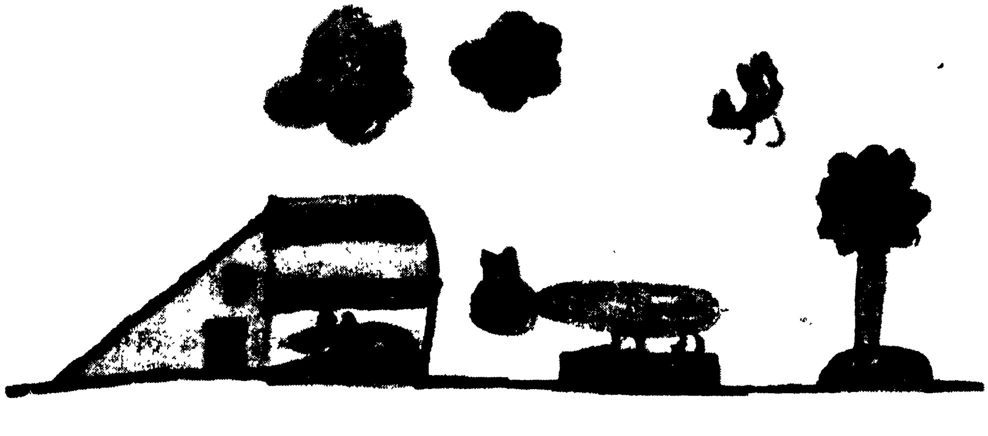

गीत निगम, पाँच वर्ष, सतना, म. प्र.

काश मैं मोर होती
आसमान में उड़ती रहती
और परियों से भी मिलती
और अपने पंख लहराती
पेड़ों पर बैठती
वनों में नाचती

● भावना आठिया, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.

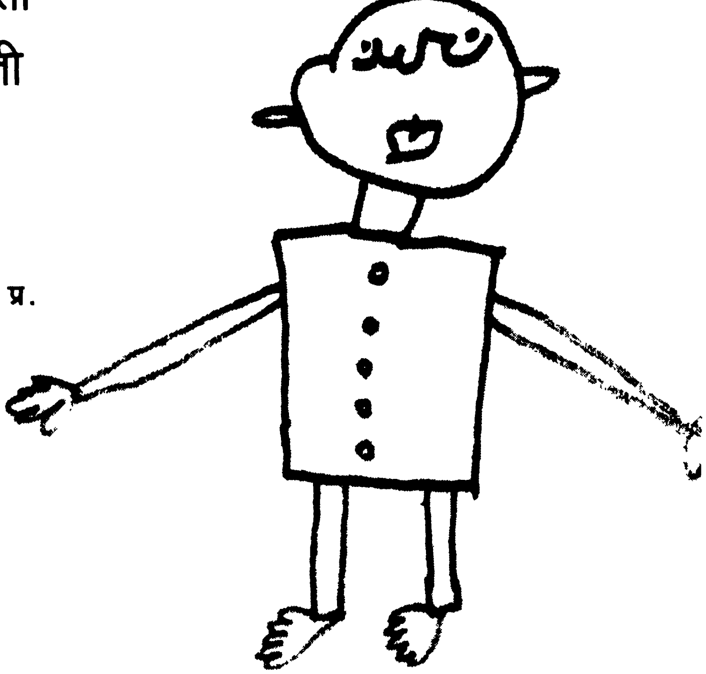

सुनीता, पाँचवीं, काँकरिया, हरदा, म. प्र

सपना

आज मेरी नानी आई, मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने उनसे खूब बातें कीं। मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरी नानी के साथ मेरी मौसी की लड़की आई। मैंने उसके साथ खूब खेल-मस्ती की। मैं उसे घुमाने भी ले गई थी। मेरे पापा ने उन्हें कपड़े लाकर दिए। फिर वो कुछ दिन रहकर चल दिए। मुझे बहुत दुख हुआ। मैं बहुत रोई और दूसरे दिन लगा कि वो सपना था। मैंने अपनी मम्मी से पूछा कि मम्मी मेहमान आए थे, वो कहाँ हैं? यह बात मेरे भाई, बहन और पापा ने भी सुन लिया और सब लोग मुझ पर हँसने लगे। तो मम्मी ने कहा कि वो तुम्हारा सपना था। तब लगा कि सच में यह सपना था।

प्रतिभा ताँडिया, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

टी वी का झगड़ा

आज मैं टी वी देख रहा था। परन्तु मेरे पिताजी समाचार देखना चाहते थे। मैं मैच देख रहा था परन्तु पिताजी ने उस चैनल को बदल दिया और मुझसे कहा कि तुम पढ़ाई में ध्यान नहीं रखते हो। एक महीने तक पढ़ाई की और अब तुम टी वी देखने में और मैच देखने में अपना समय व्यर्थ करते हो। पिताजी समाचार देखने लगे और मुझे कहा कि अब तुम पढ़ाई करो, परीक्षा आने वाली है।

परन्तु मेरा पढ़ाई में ध्यान नहीं था। मैं अपनी कॉलोनी के दोस्तों के साथ दस नम्बर गया और मैं लॉटरी खेलने लगा। मुझे 1–2 रुपए में 100 रुपए मिले। उससे मैंने सबको नाश्ता कराया। उसमें से 50 रुपए बचे। उससे मैंने कम्पास खरीदा। फिर मेरी लालच बढ़ी और मैंने 100 रुपए लगाया तो मुझे एक रुपए भी नहीं मिले। जब मेरे पिताजी को मालूम हुआ तो मुझे पिटाई पड़ी।

● अरविन्द पाण्डेय, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

सुरेश कुमार, दूसरी, लोधर, कानपुर, उ. प्र.

मेरा पन्ना

चित्रकला प्रतियोगिता में

एक बार हमारे स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता थी। हम सब चित्र बना रहे थे। तभी दो दोस्त आपस में बात कर रहे थे कि वे क्या बना रहे हैं। लेकिन जब चित्रकला प्रतियोगिता का रिजल्ट आया तो दोनों में से एक का इनाम आया था जिसका नाम हम अभी भी नहीं जानते थे।

लेकिन अब ये पता है कि वे क्या बात कर रहे थे। वे दोनों चित्र बनाने लगे तो वे दोनों एक ही चित्र बना रहे थे जिसमें वे बस एक्सीडेण्ट बता रहे थे। एक दोस्त ने कहा कि बस के बारे में ही बता रहे हैं क्यों न कुछ दिन पहले जो एक्सीडेण्ट हुआ था उसी को दर्शा दें। दर्शाया दोनों ने एक जैसा, पर जिसने बताया था उससे ज़्यादा अच्छा उसके दोस्त ने दर्शा दिया। इससे इनाम उसके दोस्त का निकला।

● शिवानी सलूजा, नवमीं, भोपाल, म. प्र.

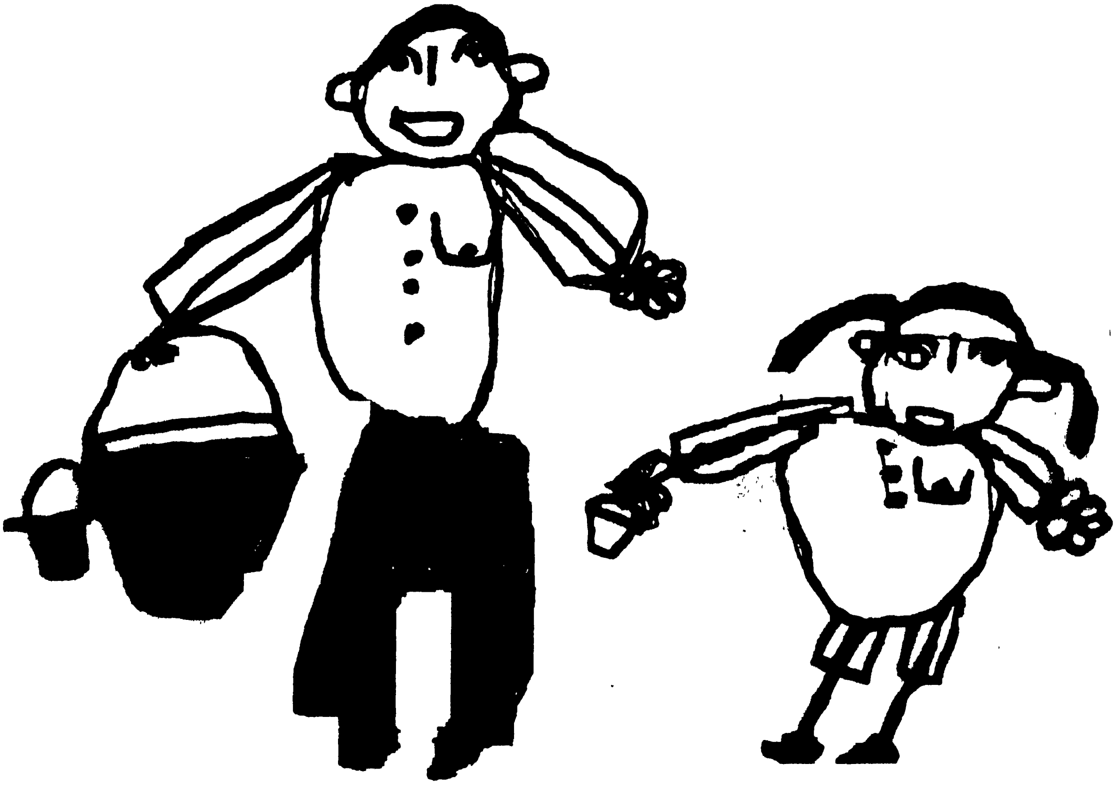

● अनुज चौहान, टिमरनी, हरदा, म. प्र.

सब कुछ ऊटपटांग

तुम भी सुन लो एक कहानी
चुन्नू मुन्नू और उनकी भी नानी
सच्ची-सच्ची नहीं है याद
क्योंकि ये है गप्पीदास की बात

चींटियों ने है फौज बनाई
हाथी के पूँछ से करी चढ़ाई
एक चींटी ने मारी लात
हाथी के नहीं बचे दाँत।

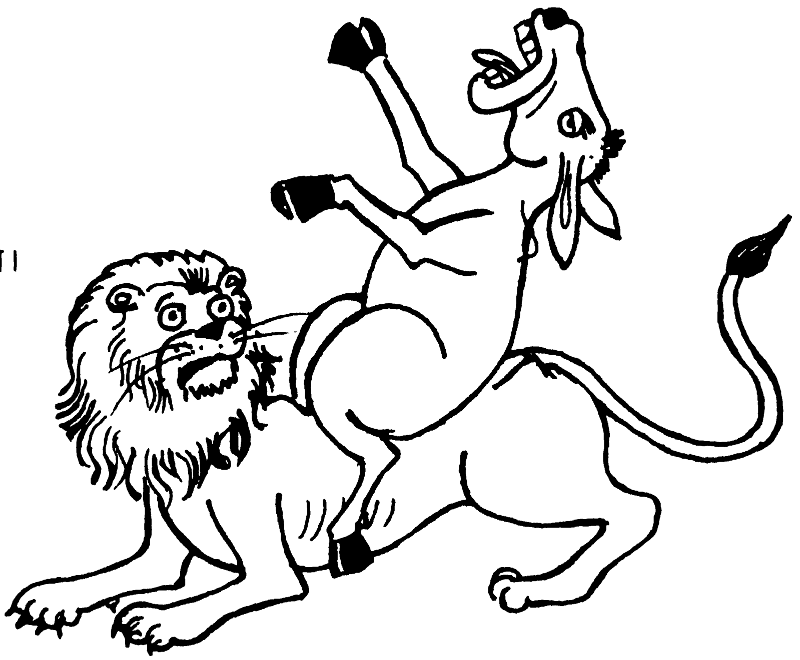

गधा शेर पर चढ़कर चिल्लाया
अब मैं हूँ इस जंगल का राजा
भालू यहाँ न तू अकड़
नहीं तो दूँगा नाक रगड़

मच्छरों को भी जोश है आया
तितलियों को शादी का न्यौता भिजवाया।
मक्खी भी है इठलाती
उसने की है ऊँट से शादी।

मेंढक भी है टर्राया
मैंने भी मगरमच्छ को
पूँछ घसीटकर
नदी से भगाया

अब नहीं सुन सकते और
इतने में ही हो गए बोर!

● कविता : अज्ञात
● चित्र : अमित सिन्हा

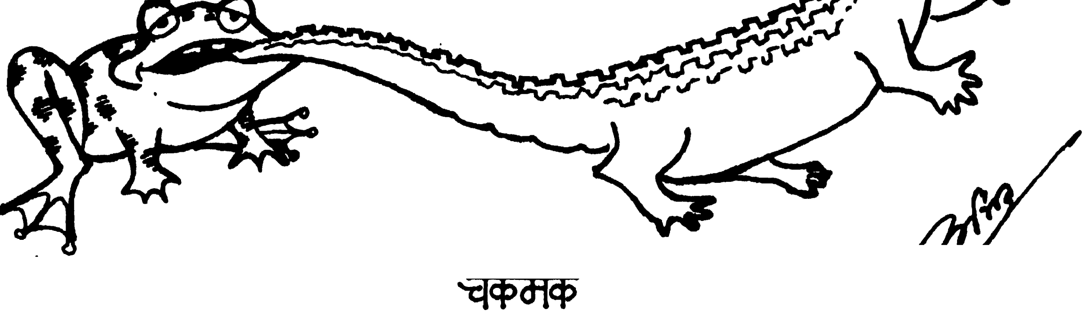

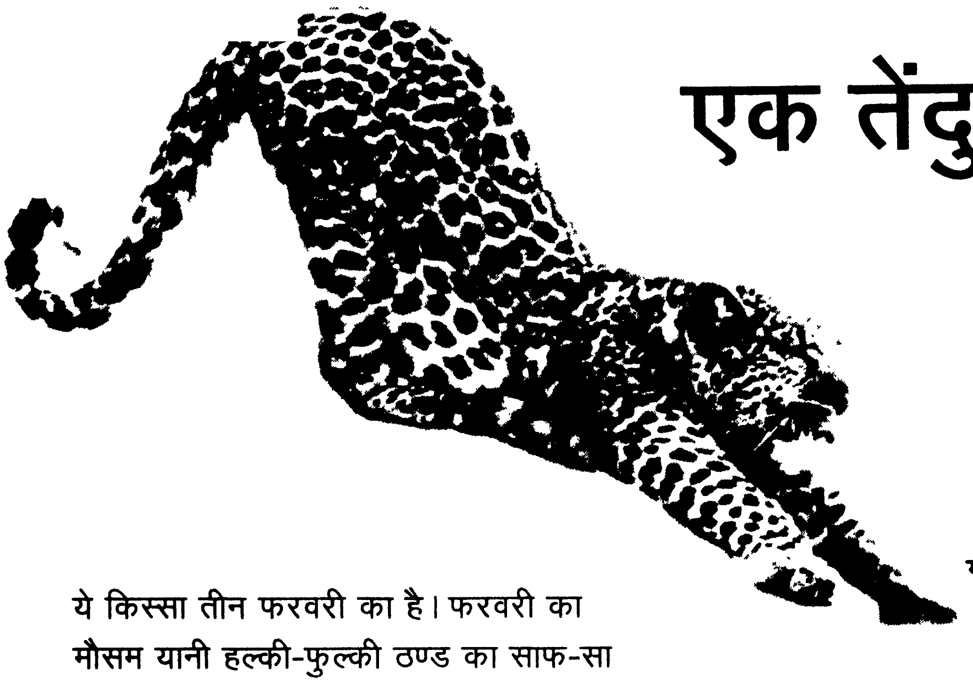

एक तेंदुआ

मूल रिपोर्ट : डॉ.सुरेश मिश्र
प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

ये किस्सा तीन फरवरी का है। फरवरी का मौसम यानी हल्की-फुल्की ठण्ड का साफ-सा मौसम! कटंगी, यानी मेरा गाँव एक वनग्राम है। सिवनी से कोई पचास किलोमीटर दूर। हमारा गाँव ज़्यादा बड़ा नहीं है। मुश्किल से पचास घरों वाला होगा। हम में से कुछ खेती करते हैं और कुछ मेहनत-मज़दूरी!

किस्सा जो आपको सुनाने जा रहा हूँ वो नवलसिंह के घर से शुरू होता है। उस रात नवलसिंह अपने घर में लेटा था। रह-रह कर पास के कमरे से बकरियों मिमियाने की आवाज़ आ रही थी। जब ये थोड़ी देर चलता रहा तो नवलसिंह ने उठकर देखने की सोची। एक चिमनी पकड़ी और एक हाथ में लठिया थामी। और कमरे की तरफ चल पड़ा। देखा कमरे में एक कुत्ता घुस आया है। नवलसिंह जैसे ही आगे बढ़ा। कुत्ता दूसरे कमरे में घुस गया। नवलसिंह दूसरे कमरे में पैर रखता कि कुत्ते ने उस पर छलाँग लगा दी। इस हमले में नवलसिंह का हाथ घायल हो गया।

नवलसिंह फुर्ती से बाहर भागा और उसने दरवाज़े की साँकल चढ़ा दी। जिसे वह कुत्ता समझ बैठा था वो असल में तेंदुआ था। तेंदुआ कमरे में बन्द तो कर दिया लेकिन अब क्या किया जाए? सारे गाँव में बात फैल गई। सब लोग इकट्ठा हो गए। सलाह-मश्विरे के बाद तय हुआ कि इसकी खबर वन विभाग को दी जाए।

तब पास के कान्हा राष्ट्रीय पार्क के वन विभाग के लोगों को खबर दी गई। वहाँ से दो लोग जो इस काम में माहिर माने जाते थे, उन्हें हमारे गाँव जाने का आदेश मिला। काफी देर से लेकिन वो लोग पहुँच ही गए। उन्होंने बताया कि रास्ते में बारिश और फिर घने कोहरे के कारण देर हुई। वे पूरे साज़ोसामान के साथ थे। लोहे की छड़ों वाला एक बड़ा-सा पिंजड़ा, रायफलें और डार्टगन, कुछ दवाइयाँ।

डार्ट बेहोश करने वाला एक इंजेक्शन होता है। अब जंगली जानवरों को पास जाकर हमारी तरह तो इंजेक्शन लगा नहीं सकते। उन्हें हवा के दबाव से चलने वाली एक बन्दूक से

इंजेक्शन लगाते हैं। रात होने के कारण अँधेरा था। यह सारा काम उन्हें रात ही रात में पूरा करना था। दिन में तो लोगों के हुजूम के कारण मुश्किलें बढ़ जातीं।

आधी रात बाद कार्यवाही शुरू हुई। पिंजड़ा दो हिस्सों में बँटा हुआ था। एक हिस्से में एक बकरी बाँधी गई ताकि तेंदुआ बकरी खाने पिजड़े में दाखिल हो। प्लान यह था कि जैसे ही वो दाखिल हो, पिंजड़े का दरवाज़ा बन्द कर तेंदुए को पिजड़े में कैद कर लिया जाएगा।

पिंजड़े को कमरे के दरवाज़े के ठीक सामने रखा गया। और फिर कमरे का दरवाज़ा खोल दिया। ज्यों ही दरवाज़ा खुला तेंदुआ पिंजड़े में जा घुसा। उन लोगों ने झट-से पिंजड़ा बन्द कर दिया। तेंदुए को पिंजड़े में कैद करने के बाद दूसरी तरफ से बकरी को बाहर निकाल दिया गया।

वन विभाग वालों ने पिंजड़े के ऊपर सूखी ज्वार की कड़वी डाल दी ताकि तेंदुआ पिंजड़े के बाहर न देख सके। वो बताने लगे कि इसके दो फायदे हैं। एक तो वो मनुष्यों को देखकर बौखलाएगा नहीं और पिंजड़े में पंजे या दाँत नहीं मारेगा जिससे उसके घायल होने की सम्भावना रहती है। दूसरे अगर वह लोगों को करीब से देखता रहा तो मनुष्य जाति के प्रति उसका डर जाता रहेगा, जो और भी खतरनाक है।

कड़वी डालने के बावजूद ज़रा-सी आहट होती और वो तेंदुआ गुस्से से छड़ों में पंजे मारने लगता। यह सब चल ही रहा था कि वन विभाग का एक और अमला आ गया। ये अमला सिवनी के वन विभाग कर्मचारियों का था। उनके पास भी एक पिंजड़ा था – लकड़ी का। इसमें छोटे-छोटे सुराख भी थे ताकि हवा की आवाजाही बनी रहे।

दोनों अमलों के लोगों ने बातचीत की। लोहे के पिंजड़े में तेंदुए को ज़्यादा देर रखना ठीक नहीं था क्योंकि अगर वो घायल हो जाता

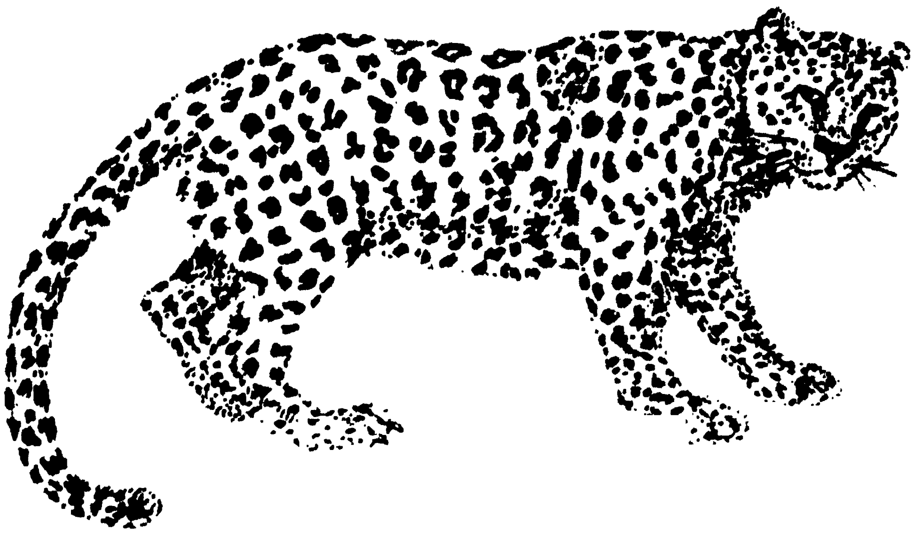

तो उसे जंगल में नहीं छोड़ सकते थे। पिंजड़ा तो एक और था जो इस लिहाज़ से सुरक्षित था, पर सवाल यह था कि तेंदुए को उस पिंजड़े में कैसे ले जाया जाए?

काफी सोच विचार के बाद यह तय किया गया कि तेंदुए को पहले बेहोश किया जाए। और फिर पिंजड़े की अदला-बदली हो। तेंदुए को बेहोश करने के लिए इंजेक्शन में दवा डाली गई। दवा की कितनी मात्रा देनी है, इसकी बारीकी से नापजोख हुई। कहते हैं ये दवा इतनी खतरनाक होती है कि ज़रा-सी लापरवाही से जानवर की जान तक जा सकती है। दवा देने के पन्द्रह मिनट बाद तेंदुआ बेहोश हो गया।

उस वक्त रात के दो बज रहे थे। लोहे के पिंजड़े को खोलकर उसमें से तेंदुए को उठाया गया और आहिस्ता-आहिस्ता दूसरे पिंजड़े में रखा गया। मैं सोच रहा था इस वक्त अगर तेंदुआ जाग जाए तो क्या हो?!

फिर वन विभाग वालों ने तेंदुए की जाँच पड़ताल की। बस चेहरे पर खरोंचों को छोड़ दें तो तेंदुआ सही सलामत था। फिर उन लोगों ने उसकी साँस और धड़कनें जाँचीं। दरअसल बेहोशी की हालत में जानवरों की धड़कनें कमज़ोर पड़ जाती हैं। इन पर हमेशा नज़र रखनी पड़ती है।

चलो, पिंजड़े की अदला-बदली का काम तो ठीक-ठाक हो गया था। अब ये सोचना था कि तेंदुए को कहाँ छोड़ा जाए। किसी ऐसी जगह की तलाश थी जहाँ एक तो लोगों की आवाजाही न हो और जंगल कुछ घना-सा हो। काफी सोच-समझकर यह तय किया गया कि कटंगी से तीस किलोमीटर दूर तोतलाडीह ठीक रहेगा। यह तोतलाडीह पनबिजली परियोजना के डूब में आने वाला क्षेत्र था।

उस जगह पहुँचने के बाद पिंजड़े को सावधानी से ट्रक से उतारा गया। फिर सब लोग एक ऐसा पेड़ ढूँढने लगे जिसकी शाख कुछ नीची हो। पिंजड़े को उसके ठीक नीचे रखा गया। रस्सी का एक सिरा पिंजड़े के फाटक से बाँधकर दूसरा सिरा शाख के ऊपर से डाला। इस शाख के ऊपर वाले सिरे को खींचकर पिंजड़े का दरवाज़ा खोलना था। इस तरह हम तेंदुए से दूर बने रह सकते थे।

सुबह के लगभग पाँच बज रहे होंगे। तेंदुआ गुर्रा रहा था। यानी महाशय होश में आ चुके थे। बस अब थोड़े से उजाले की ज़रूरत थी ताकि वन विभाग वाले लोग देख सकें कि आज़ाद तेंदुआ कहाँ जाता है। इतने में घुप्प जंगल की तरफ से टॉर्च टिमटिमाई। कुछ लोगों की धीमी-धीमी आवाज़ें भी आ रही थीं।

वन विभाग के लोग सतर्क हो गए। रायफलें थाम आहिस्ता-आहिस्ता उस तरफ बढ़ने लगे जिस तरफ से आवाज़ें आ रही थीं। पास जाने पर पता चला कि एक वनरक्षक अपनी टीम के साथ पेड़ों पर निशान लगा रहा है। निशान उन पेड़ों पर लगाए जा रहे थे जिन्हें काटा जाना था। उनके हिसाब से ये पेड़ डूब में आने वाले थे।

अब एक नई समस्या आ खड़ी हुई। जब इस क्षेत्र में लोग काम करते घूम रहे थे, तब यहाँ तो तेंदुए को छोड़ना खतरे से खाली नहीं था। अब तेंदुए के लिए फिर से नए सिरे से एक वाजिब जगह देखनी थी।

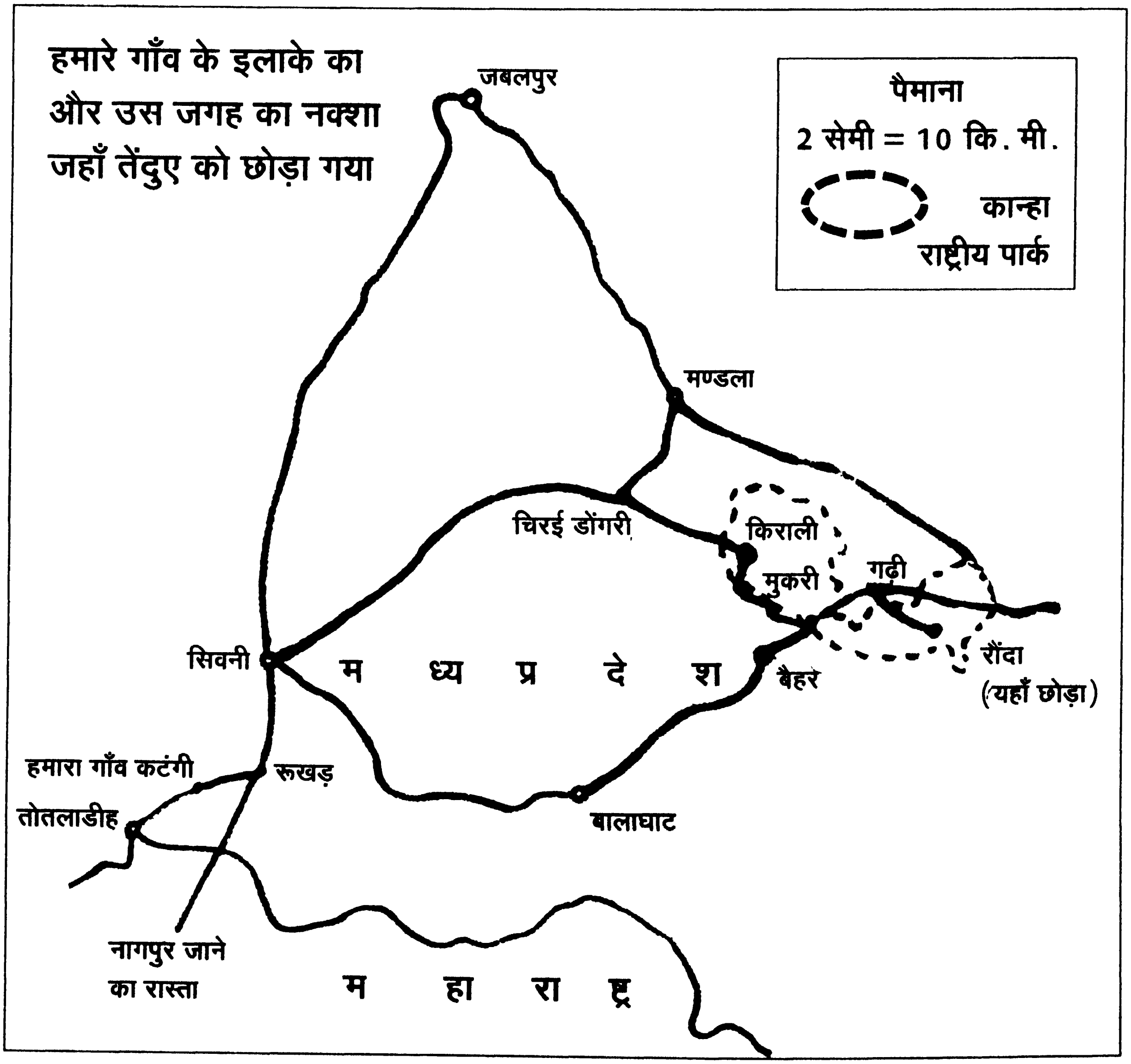

वन विभाग की टीम उस क्षेत्र के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थी। लेकिन तेंदुए को पहले की जगह न छोड़ते हुए किसी नई जगह पर छोड़ने के पहले वनमण्डल के अधिकारी से इसकी अनुमति और सलाह लेनी थी। इसके लिए एक जीप सिवनी रवाना हुई। मण्डल अधिकारी ने कुछ कारणों के चलते तेंदुए को वहाँ छोड़ने से मना कर दिया। उन्होंने राय दी कि उसे कान्हा राष्ट्रीय पार्क में छोड़ा जाए।

वन्य प्राणी भूख की बजाए प्यास से ज़्यादा पीड़ित होते हैं। इसलिए तेंदुए के लिए लगातार पानी का इन्तज़ाम करना था। लम्बे सफर से पहले तेंदुए के पिंजड़े की थाली में एक बड़े पत्ते से पानी डाला गया। शायद तेंदुए ने पानी पिया होगा। फिर उसे लेकर ट्रक कान्हा के लिए रवाना हो गया। तेंदुआ छोड़ने का नजारा देखने हम भी साथ चल दिए।

रास्ता कच्चा और ऊबड़-खाबड़ था और हमें जाना था सवा सौ मील! दोपहर में गर्मी और उमस काफी थी। तेंदुए को कुछ राहत देने की नीयत से एक जगह रुककर पिंजड़े पर पानी डाला गया। रास्ते भर हम रुक-रुककर तेंदुए की खबर लेते रहे।

हम लोग थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि फिर बारिश शुरू हो गई। कुछ देर बाद ओले भी बरसने लगे। ठण्ड भी लगने लगी थी। ऊपर से वन विभाग वालों को तेंदुए की चिन्ता थी कि कहीं उसे निमोनिया न हो जाए! कान्हा पहुँचकर तेंदुए को छत के नीचे रखा गया। बारिश रात भर होती रही।

अगले दिन यानी सात फरवरी को कान्हा के पार्क संचालक को सूचना दी गई कि तेंदुआ ले आए हैं। उन्होंने सलाह दी कि तेंदुए को कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के भैंसानघाट परिक्षेत्र में छोड़ दिया जाए। यानी हमें पिछत्तर किलोमीटर और चलना था। तिस पर तीन चौथाई रास्ता कच्चा था। बारिश ने मुश्किलें बढ़ाने में खूब मदद की थी। खैर!

आखिरकार सब कुछ ठीक-ठाक ही रहा। हम दोपहर के दो बजे रौंदा पहुँचे। वहाँ वनकर्मियों की कोई हड़ताल चल रही थी। इस कारण रास्ते भर बैरियर बन्द मिले। हमारे साथ के वन कर्मचारी उन्हें खुलवाने के लिए मशक्कत करते रहे। बावजूद इसके कुछ लोगों ने बहुत मदद की। कुछ लोग तो तेंदुआ छोड़ते वक्त मदद के लिए साथ भी आ गए।

सही जगह पर पहुँचकर एक सरई के पेड़ के नीचे पिंजड़ा उतारा गया। सरई के इस पेड़ की एक निचली शाख पर रस्सी डाली और उसका एक सिरा पिंजड़े के फाटक से बाँध दिया। बस अब दूसरा सिरा पकड़कर रस्सी खींचना थी। सभी लोग जीप पर खड़े हो गए यानी पिंजड़े से पच्चीस फुट दूर! एहतियात के लिए वनकर्मियों ने रायफलें भी सँभाल ली थीं। पिंजड़े का दरवाज़ा खुला। पिंजड़े के अन्दर से ही तेंदुए ने आसपास का कुछ जायज़ा सा लिया और छलाँग लगा दी उसकी अपनी दुनिया में! हम नज़रों से ओझल हो जाने तक उसे देखते रहे!

○ ○ ○

चूहा

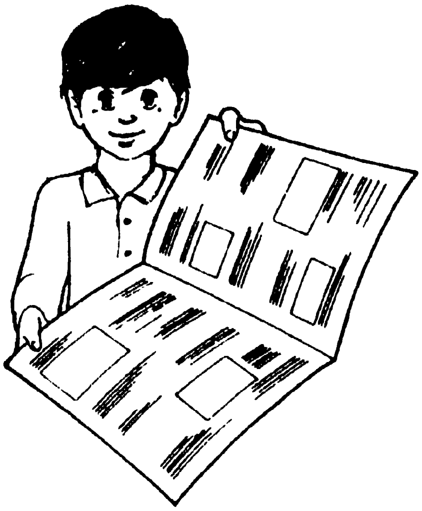

चलो इस बार कागज़ मोड़-मोड़कर एक नन्हा-सा, प्यारा-सा चूहा बनाते हैं। तो कागज़ लेकर हो जाओ तैयार।

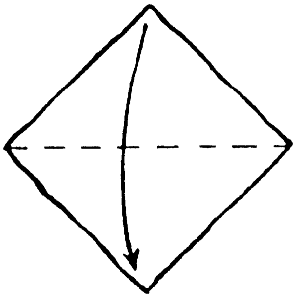

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। आमने सामने के कोई भी दो कोने एक साथ लाते हुए मोड लो।

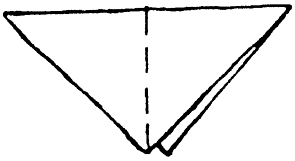

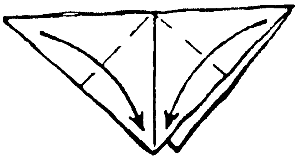

2. कागज इस तरह रखना कि उसके खुले पल्लों का मुँह तुम्हारी तरफ हो। बीच की टूटी रेखा पर मोड़ बनाकर खोल लो।
3. दाईं और बाईं तरफ के कोनों को नीचे की तरफ लाते हुए इस तरह मोड़ो कि वो नीचे वाले कोने के ठीक ऊपर आ जाएँ।

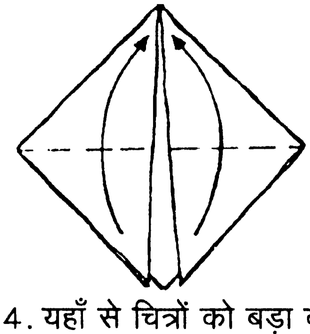

4. यहाँ से चित्रों को बड़ा करके दिखाया गया है। जिन दो कोनों को अभी नीचे लेकर आए थे उन्हीं को टूटी रेखा पर ऊपर की तरफ मोड़कर आधा कर दो।

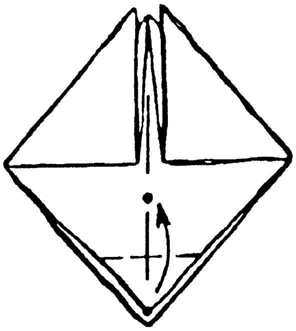

5. इस आकृति में नीचे की ओर दो पल्ले हैं। इनमें से ऊपर वाले पल्ले को चित्रानुसार ऊपर की तरफ मोड़ दो।

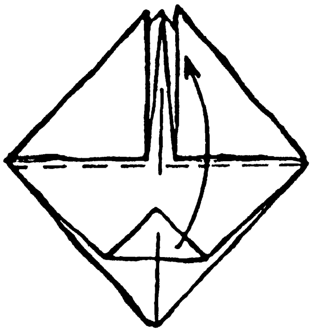

6. इसी पल्ले को ऊपर की तरफ ले जाते हुए दुबारा मोड़ दो। ज़रा देखो आकृति का एक खुला पल्ला तुम्हारी तरफ ही है न!

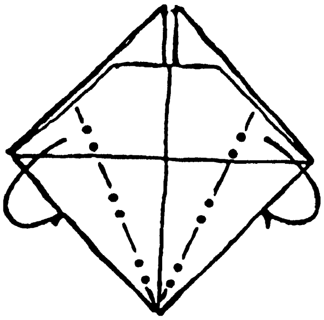

7. अब दाएँ बाएँ के दोनों कोनों को पीछे की ओर ले जाते हुए बिन्दु वाली रेखा पर से मोड़ दो।

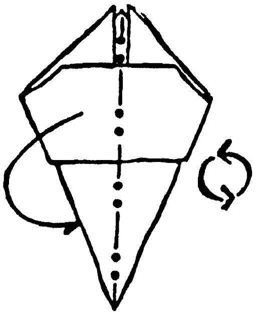

8. ऐसी आकृति मिलेगी। इस आकृति को बीच की बिन्दु रेखा से पीछे की ओर मोड़ लो। इस तरह एक त्रिभुज की आकृति बनेगी। फिर इसे घुमा लो ताकि त्रिभुज की सबसे लम्बी सतह ऊपर की ओर आ जाए।

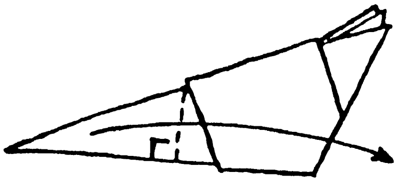

9. ऐसे। इस आकृति में एक पतली पूँछनुमा तिकोनी पट्टी है। उसे चित्र में दिखाए तरीके से टूटी रेखा पर आगे की ओर मोड़ो।

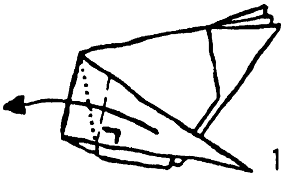

10. इसी पूँछ को फिर पीछे की तरफ मोड़ना है।

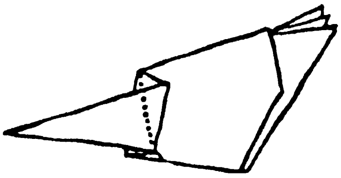

11. इन दो मोड़ों को खोल लो। फिर बीच के मोड़ को भी खोलकर पूँछ वाले हिस्से को दोनों मोटी पट्टियों के अन्दर धकेलते हुए मोड़ बनाना है। इस तरह पूँछ बन जाएगी।

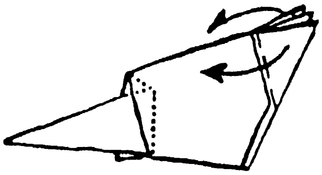

12. अब कान की बारी। आगे दिख रही दो छोटी पट्टियों को पीछे की तरफ मोड़ोगे तो कान बन जाएँगे।

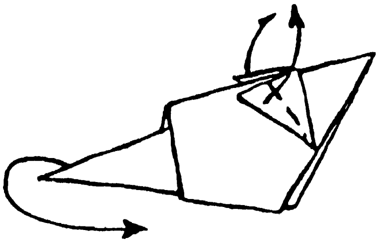

13. इन्हें बीच में बनी टूटी रेखा पर से ऊपर की ओर मोड़ लो। बस कान तैयार।

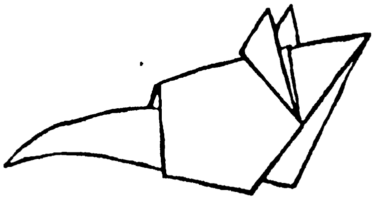

14. अब रही सजावट की बात तो उसमें तो तुम उस्ताद हो ही! बस पूँछ को गोलाई देने के लिए नाखून से या पेंसिल से रगड़ दो। देखो कहीं चूहा तुम्हारी किताबें न कुतरने लगे!

प्रस्तुति: आइवर यूशियल

चकमक के पाठकों के लिए...

एकलव्य का एक नया प्रकाशन

चलो चित्र बनाएँ
Let's DRAW

बच्चों में मौजूद सृजनात्मकता, कला-प्रेम और अभिव्यक्ति को भारतीय परिवेश के चित्रों के ज़रिए मंच देने का एक अभिनव प्रयास

मूल्य : केवल 15 रुपए
(डाक खर्च 10 रुपए अतिरिक्त)

चकमक के पाठक किताब मँगवाने के लिए 22 रुपए का मनीऑर्डर नीचे दिए पते पर भेजें -

एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016

होली के दिन

होली के दिन आ गए
सजे फूल से द्वार
मुनिया रानी कर रही
रंगों की बौछार

घर घर में है बन रहीं
गुजिया पपड़ी सेव
चुनिया मुनिया को मिले
भर भर पूरी जेब

अपने अपने आ गए
लेकर लाल गुलाल
एक दूसरे के रंगे
सबने जमकर भाल

मुनिया रानी के हुए
दोनों गाल गुलाब
मुखड़ा गेंदा फूल सा
उसका नहीं जवाब

रंग बासंती को बना
ले टेसू के फूल
आँगन वाली कर गई
मुनिया पीली धूल

मुनिया रानी आ गई
लेकर लाल गुलाल
लाल टमाटर कर दिए
उसने माँ के गाल

लाल हरी बौछार कर
मुनिया जाती भाग
खिलखिल-खिलखिल वह हँसे
दिल हो जाता बाग

लाल गुलाबी कर दिए
घर के सारे लोग
चुनिया मुनिया को लगा
चिल्लाने का रोग!

गोपीचन्द श्रीनागर
● चित्र : विवेक

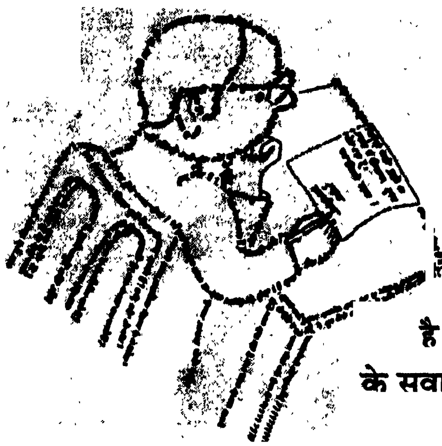

सवालीराम

ये हैं सवालीराम। चकमक के पुराने पाठक इनसे परिचित हैं मज़ाक नहीं, इनका नाम वाकई सवालीराम ही है! और इनका का है लोगों के तरह-तरह के सवालों के जवाब ढूँढ-ढूँढकर बताना। बच्चे के सवालों का जवाब ढूँढने में इन्हें और भी मज़ा आता है। तुम सब भी इनसे अपने मन में कलबलाने वाले सवाल पूछना शुरू कर दो

सवाल : हमें जाड़े के दिनों की अपेक्षा गरमी के दिनों में अधिक प्यास क्यों लगती है?

सवाल : गरमियों में हमें ज़्यादा आलस क्यों आता है?

गरमी के दिनों में अधिक प्यास लगने का कारण है शरीर से अधिक पसीना निकलना। पसीने के रूप में जो पानी बाहर निकल जाता है, उसकी पूर्ति शरीर के द्रव्य व रासायनिक संतुलन के लिए बहुत ज़रूरी है। इसीलिए गरमी में हमें अधिक प्यास लगती है। चलो, अब यह समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर गरमियों में अधिक पसीना क्यों आता है?

सामान्य तौर पर एक स्वस्थ मनुष्य की जीभ के नीचे का तापक्रम 37 डिग्री सैल्सियस यानी 98.6 डिग्री फैरनहाइट के आसपास माना जाता है। यदि तापमान इससे थोड़ा कम (0.3°सैल्सियस तक) भी हो तो सामान्य तौर पर वह ठीक ही है। वैसे शरीर के सभी अंगों का ताप एक समान नहीं होता है। मनुष्य के यकृत का ताप सबसे अधिक (37.8° से 38°सैल्सियस) व कपड़ों से ढके हिस्सों की त्वचा का ताप काफी कम (29.5° से 33.9°सैल्सियस तक) होता है। फिर शरीर का ताप हमेशा एक समान भी नहीं होता। इसमें 0.5°सैल्सियस से 0.7° सैल्सियस तक का उतार-चढ़ाव हो सकता है।

अपने तापमान को सामान्य के आसपास बनाए रखने के लिए शरीर कई तरीके अपनाता है। पसीने का निकलना उनमें से एक है। हमारी रोज़मर्रा की गतिविधियों के लिए हमारे शरीर को ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जब हमारे भोजन के पाचन से इकट्ठा हुए पदार्थों की ऑक्सीजन से क्रिया होती है, तब उसी क्रिया से यह ऊर्जा हमें प्राप्त होती है। पर इस प्रक्रिया में उत्पन्न ऊर्जा पूरी-पूरी उपयोग में नहीं आ पाती। इसका कुछ हिस्सा ही उपयोग में आता है। बची ऊर्जा शरीर को गरम रखने में काम आती है।

सर्दियों में बाहर का, यानी हमारे आसपास की आबोहवा का ताप शरीर के सामान्य ताप से बहुत कम होता है। तब यही बची हुई ऊर्जा हमारे शरीर का ताप बनाए रखने में मदद करती है। वह हमारे शरीर को ठण्डा पड़ जाने से बचाती है।

लेकिन गरमियों के मौसम में यह अतिरिक्त ऊर्जा शरीर के लिए फालतू होती है और तब इसे शरीर से बाहर फेंकना आवश्यक हो जाता है। पसीना यही करता है। गरमी के मौसम में शरीर का पानी पसीने के रूप में त्वचा से बाहर आता रहता है और त्वचा की सतह से वाष्प बनकर उड़ता रहता है। वाष्पीकरण के लिए आवश्यक ऊर्जा त्वचा से ही ली जाती है। जैसे-जैसे गरमी बढ़ती है या शरीर के कार्य करने की गति तेज़ होती है, पसीना ज़्यादा आता है। कई बार जब वातावरण का तापमान 37°सैल्सियस या उससे अधिक हो जाता है तो भी पसीना अधिक आता है

आम तौर पर इन्सान के शरीर के लिए सबसे अनुकूल वातावरण का तापक्रम 18° से 22° सैल्सियस के बीच होता है। वातावरण के सामान्य तापमान पर सामान्य काम करने वाले व्यक्ति अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए 24 घण्टे में 4 से 5 लीटर तक पसीना छोड़ते हैं। जबकि होटल, हलवाई की दुकान या लोहे की फाउण्ड्री में आग के पास काम करने वाले लोग 10 से 20 लीटर तक पसीना छोड़ते हैं।

अब कुछ बातें दूसरे सवाल के बारे में। दरअसल गरमियों में अधिक आलस आने का सम्बंध भी पसीने से है। पसीना मात्र पानी नहीं होता, इसमें कई लवण भी होते हैं। अधिक पसीने के साथ ये लवण भी अधिक मात्रा में निकलते हैं। इससे शरीर का रासायनिक संतुलन गड़बड़ा जाता है। फलस्वरूप सिरदर्द व चक्कर आने से लेकर बेहोश होना या गुर्दों के काम बन्द कर देने तक की स्थिति आ सकती है। लवणों में विशेषकर नमक की मात्रा कम होने पर जल्दी थकान महसूस होने लगती है।

मानव के शरीर में खून का परिवहन उसकी स्थिति के अनुसार बदलता है। जब हम खड़े होते हैं तो खून पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण बल की वजह से नीचे आसानी से जाता है और ऊपर यानी मस्तिष्क में मुश्किल से। आमतौर पर जब हम खड़े होते हैं तो टाँगों की रक्त कोशिकाएँ सिकुड़ जाती हैं। इससे टाँगों को भी खून मिलता रहता है और मस्तिष्क को भी।

लेकिन अधिक गरमी पड़ने पर शरीर की यह व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। वास्तव में शरीर का ताप सामान्य नहीं रहने पर शरीर के सभी क्रियाकलाप गड़बड़ा जाते हैं। इसीलिए बहुत गरमी में खड़े होने पर शरीर के निचले हिस्से को भेजे जा रहे खून की मात्रा में कमी नहीं हो पाती है। यानी तब मस्तिष्क को ज़रूरत से कम खून मिलता है। इसका परिणाम यह होता है कि काम करने की इच्छा नहीं होती और थकान का अहसास होता है। ऐसे में यदि ज़बरदस्ती काम करते हैं तो मस्तिष्क को जा रहे खून की मात्रा में और भी कमी आ जाती है। इससे और ज़्यादा थकान महसूस होती है।

तेज़ गरमी में चलती हवा में लेटे रहने का मन करता है। इससे शरीर को फायदा भी मिलता है। त्वचा से ज़्यादा से ज़्यादा पानी का वाष्पीकरण हो पाता है और मस्तिष्क को ज़रूरत के हिसाब से खून भी मिलता रहता है।

अधिक पसीना आने के और भी कई कारण हो सकते हैं। क्या तुम सोचकर बता सकते हो कि ये कारण क्या हैं? एक सवाल और, सर्दियों में शरीर को ज़्यादा मात्रा में गरमी पैदा करने की ज़रूरत होती है। सोचो ठण्ड के मौसम में हम ऐसा क्या-क्या करते हैं, जिससे शरीर का ताप बनाए रखने में मदद मिले? और सर्दियों में हमें कँपकँपी क्यों छूटती है?

भई, ऐसा थोड़े ही है कि मैं सिर्फ सवालों के जवाब ही देता हूँ। कभी-कभी मैं सवाल पूछ भी लेता हूँ। इस बार के इन दो सवालों के बारे में सोचना। और मुझे चकमक के पते पर वह सब लिख भेजना जो तुम्हें इनके बारे में सूझे या पता चले। मिलेंगे, अगले अंक में किसी नए सवाल-जवाब के साथ!

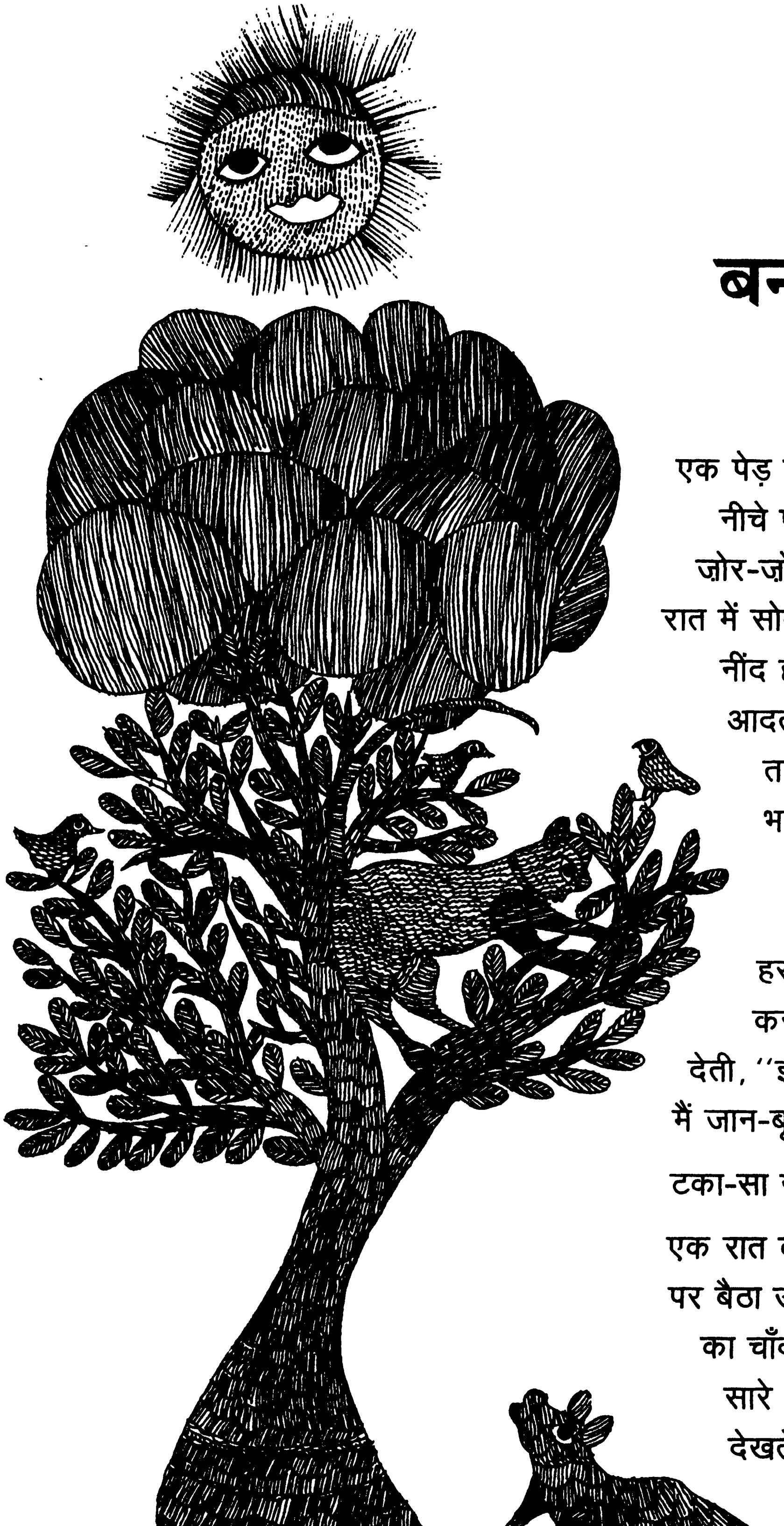

बन्दर और लोमड़ी

मोहम्मद अरशद खान

एक पेड़ पर एक बन्दर रहता था। उसी के नीचे एक लोमड़ी रहती थी। लोमड़ी को ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भरने की आदत थी। रात में सोती तो उसके खर्राटों से बन्दर की नींद हराम हो जाती। बन्दर उसकी इस आदत से बहुत परेशान था। भोजन की तलाश में वह दिन भर दूर-दूर तक भटकता रहता था। शाम को लौटता तो बेहद थक जाता। जब सोने लगता तो लोमड़ी के खर्राटे चैन हराम कर देते। लोमड़ी से शिकायत करता तो वह बड़े भोलेपन से जवाब देती, ''इसमें मेरा क्या कसूर बन्दर भैया। मैं जान-बूझकर खर्राटे थोड़े ही भरती हूँ।''

टका-सा जवाब पाकर बन्दर चुप हो जाता।

एक रात को खर्राटों से परेशान बन्दर डाल पर बैठा ऊँघ रहा था। आकाश में पूर्णमासी का चाँद चमचमा रहा था। दूधिया रोशनी सारे जंगल में फैली थी। तभी चाँद को देखते हुए बन्दर को एक उपाय सूझा। वह खुश हो उठा। उसने चिल्ला-चिल्लाकर लोमड़ी को जगा दिया।

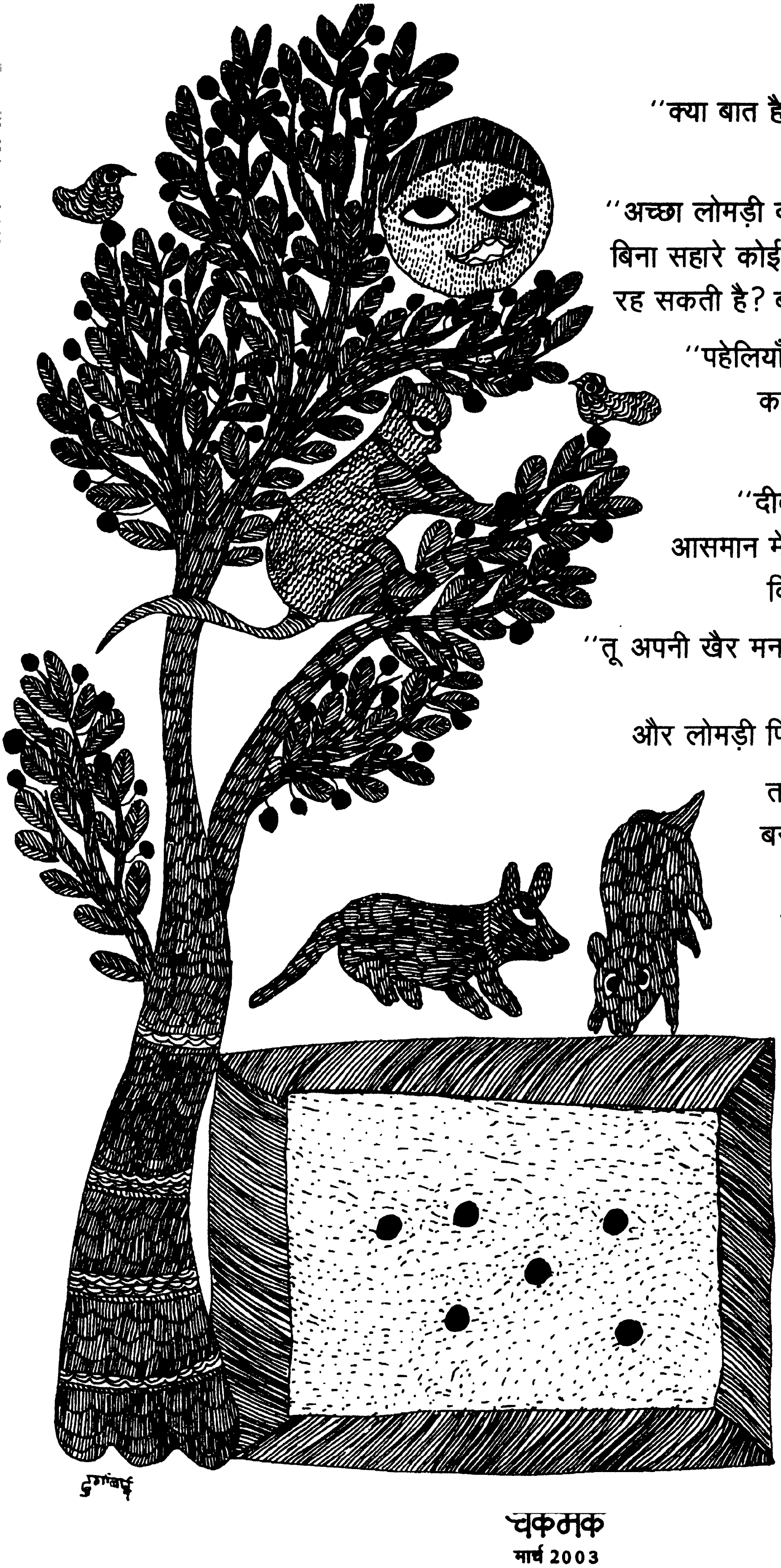

"क्या बात है? क्यों शोर मचा रहे हो? लोमड़ी ने खीझकर पूछा।

"अच्छा लोमड़ी दीदी, यह तो बताओ, क्या बिना सहारे कोई चीज़ आसमान में लटकी रह सकती है? बन्दर ने भोलेपन से पूछा।

"पहेलियाँ मत बुझाओ। साफ-साफ कहो क्या बात है?" लोमड़ी चिढ़कर बोली।

"दीदी क्या तुमने सोचा है कि आसमान में बिना सहारे लटका चाँद किसी दिन गिर पड़ा तो?"

"तू अपनी खैर मना, कहीं तुझ पर आसमान ही न टूट पड़े। मूर्ख!" और लोमड़ी फिर से खर्राटे भरने लगी।

तरकीब असफल होते देख बन्दर बहुत दुखी हुआ। पर उसने हार न मानी। वह सोच-विचार में लगा रहा।

बगल में एक तालाब था। उसके शान्त जल में पूर्णिमा का चाँद झिलमिला रहा था। यह देखते ही बन्दर को एक उपाय सूझा।

उसने एक फल तोड़ा और पूरी ताकत से तालाब में दे मारा। शान्त जंगल में 'छपाक' की आवाज़ दूर-दूर तक गूँज गई।

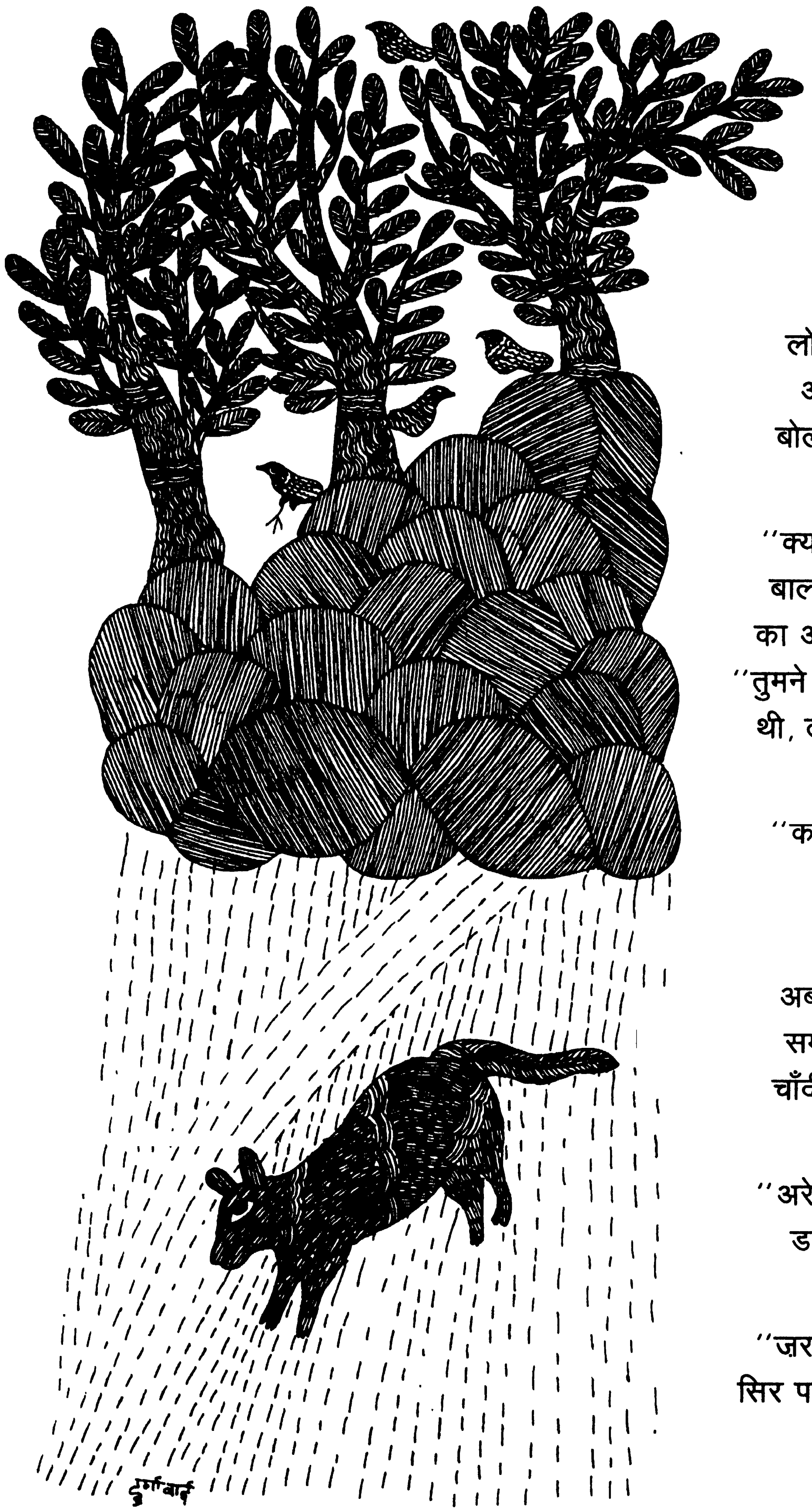

लोमड़ी हड़बड़ाकर उठ बैठी और घबराई हुई आवाज़ में बोली, ''यह आवाज़ कैसी थी बन्दर भैया।''

''क्या बताऊँ दीदी, तुम बाल-बाल बचीं, बन्दर घबराए होने का अभिनय करता हुआ बोला, ''तुमने मेरी बात हँसी में उड़ा दी थी, लेकिन देखो, चाँद सचमुच गिर पड़ा।''

''कहाँ? किधर?.....'' लोमड़ी चकरा गई।

''वह देखो तालाब में।''

अब तक तालाब की हलचल समाप्त हो गई थी और चाँद, चाँदी की थाल जैसा झलकने लगा था।

''अरे हाँ, सचमुच.....!'' लोमड़ी डर के मारे थर-थर काँपने लगी।

''ज़रा सोचो, अगर यह तुम्हारे सिर पर गिर जाता तो?'' बन्दर ने मौका पाकर उसे और डराया।

अब तो लोमड़ी की हिम्मत जवाब दे गई। वह सिर पर पैर रखकर भाग खड़ी हुई। इतनी तेज़ भागी कि उसकी पूँछ कँटीली झाड़ियों में उलझकर नुच गई। उसकी हालत देखकर बन्दर पेट पकड़कर हँसने लगा।

लोमड़ी ने भागकर गढ़े में बनी एक माँद में शरण ली। उस दिन के बाद से वह खुले में कभी नहीं लेटी।

अब बन्दर की मौज हो गई। वह चैन की नींद सोने लगा।

सभी चित्र : दुर्गाबाई

थर्मामीटर की कहानी

सुशील जोशी

प्रतिरोध थर्मामीटर

यह तो तुम जानते ही हो कि कुछ चीज़ों में से बिजली बह सकती है, जबकि कुछ चीज़ों में नहीं। पहली किस्म की चीज़ों को हम विद्युत के सुचालक और दूसरी को कुचालक कहते हैं। अब यदि हम विद्युत के सुचालकों को लें, तो उनमें भी बहुत विविधता होती है। किसी में ज़्यादा अच्छे से बिजली बहती है तो किसी में कम। कोई भी पदार्थ लें, वह बिजली के बहने में कुछ न कुछ रुकावट तो डालता ही है। इस रुकावट को उसका प्रतिरोध कहते हैं।

पदार्थों का यह प्रतिरोध कई बातों पर निर्भर करता है। अव्वल तो यह खुद उस पदार्थ पर ही निर्भर है। जब हम परिपथ में तार लगाते हैं तो उसका प्रतिरोध इस बात पर भी निर्भर होता है कि तार कितना मोटा लगाया गया है या कितना लम्बा लगाया गया है।

ऐसा देखा गया है कि किसी भी पदार्थ का प्रतिरोध उसके तापमान पर भी निर्भर होता है। यदि तापमान बढ़ाया जाए तो प्रतिरोध भी बढ़ता है। यानी यदि किसी परिपथ में कोई तार लगा हो और उसे गरम करें तो वह बिजली के बहने में ज़्यादा रुकावट पैदा करेगा। इस तथ्य का फायदा हम तापमान नापने के लिए कर सकते हैं।

इस तरह के तापमापी का एक रेखाचित्र यहाँ दिया है। इसमें एक प्लेटिनम के तार को लपेटकर एक स्टील की छड़ में रखा गया है। इस तार को उस वस्तु के सम्पर्क में रखते हैं जिसका तापमान नापना है। इस तार का प्रतिरोध नापने के लिए एक व्यवस्था का उपयोग किया जाता है जिसे व्हीटस्टोन ब्रिज कहते हैं। तुममें से कुछ लोगों ने शायद इसका नाम सुना हो। न भी सुना हो तो कोई बात नहीं। हमें तो किसी प्रकार अलग-अलग तापमान पर इस तार का प्रतिरोध नाप लेना है। एक बार यह पैमाना बन जाए, फिर हर बार प्रतिरोध की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है, सीधे तापमान पढ़ा जा सकता है।

इस तरह के तापमापी के दो फायदे हैं। एक तो यह बहुत ही संवेदनशील होता है। तापमान में परिवर्तन के साथ प्रतिरोध में परिवर्तन बहुत नियमितता से होता है। दूसरा फायदा यह है कि इस तरह के तापमापी से बहुत कम और बहुत ज़्यादा, दोनों तापमान नापे जा सकते हैं।

इसी तापमापी का एक और रूप होता है जिसमें सामान्य चालक की बजाय अर्द्ध-चालक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। इन्हें थर्मिस्टर कहते हैं।

अभी तापमापियों के कई और प्रकार बचे हैं। कुल मिलाकर बात इतनी सी है कि हमें पदार्थों के किसी ऐसे गुण का उपयोग करना है जो तापमान के साथ बदलता हो, और नियमित रूप से बदलता हो, हर बार उसी क्रम से बदलता हो। इस तरह के एक सुन्दर तापमापी का आइडिया मैं यहाँ दे रहा हूँ। देखो, क्या तुम इसको बनाने का जुगाड़ कर सकते हो? इसे बनाना मज़ेदार होगा।

यह तापमापी भी पदार्थों के एक ऐसे गुण पर आधारित है जो तापमान के साथ बदलता है। यह देखा गया है कि आमतौर पर सभी तरल पदार्थों का घनत्व तापमान बढ़ने के साथ घटता है। इसका कारण तुम खुद सोच सकते हो। इस बात का पता सबसे पहले गैलीलियो ने लगाया था। तुम यह भी जानते हो कि जब किसी तरह पदार्थ में कोई ठोस चीज़ डालते हैं तो वह

या तो डूब जाती है या तैरती रहती है। जिस चीज़ का घनत्व उस तरल से ज़्यादा होगा वह डूब जाएगी, जबकि तरल से कम घनत्व वाली चीज़ तैरती रहेगी।

अब कल्पना करो। एक तरल में कोई चीज़ डाली गई और वह तैर रही है। अब उस तरल को गर्म किया तो किसी खास तापमान पर वह चीज़ डूब गई। क्या इसके आधार पर हम एक तापमापी बना सकते हैं?

यदि एक ही चीज़ हुई तो यह तापमापी एक ही तापमान बता सकेगा। यदि ऐसी कई चीज़ें हों, जो अलग-अलग तापमान पर डूबें, तो बढ़िया तापमापी बन सकता है। सोचो ऐसी क्या चीज़ें हो सकती हैं। बनाओ और मुझे भी लिख भेजो। तब तक मैं भी कोशिश कर रहा हूँ।

एक काम और भी कर सकते हो। पदार्थ के और ऐसे गुण सोचो जो तापमान के साथ बदलते हैं। क्या इनका उपयोग भी तापमापी बनाने के लिए हो सकता है? लिख भेजो।

माथापच्ची हल

फरवरी 2003 अंक के

1. आशी की उम्र 12 साल और उसके भाई की 8 साल है।

5. 80 त्रिभुज ??????

6. 55 + (5/5)

7.

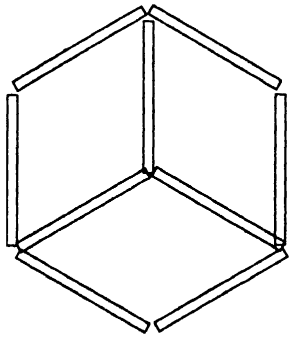

वर्ग पहेली हल

फरवरी 2003 अंक के

		आ	म	का	बौ	र		अ
चि	त्र	का	र				पं	ख
ड़ि			त		ढा	बा		बा
या	क		बा			बा	जा	र
	टा		न	श्त	र		ग	
अ	र	बी			स्सी		ना	का
ज		न	दी		कू			त
ग	ज				द	हा	ड़	ना
र		चा	र	मी	ना	र		

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार

इस बार की कहानी वैलियेंट जोन्स की है। वैलियेंट - या वैल - जैसा कि उसे उसके सभी दोस्त पुकारते हैं, 16 साल का एक छह-फुटा हट्टा-कट्टा लड़का है। यूँ तो वह बहुत ही शर्मीला है पर बास्केट बॉल के कोर्ट में उसका जोश और खेल देखते ही बनता है। वैलियेंट अमरीका के कैलिफोर्निया शहर के पूर्वी लॉस एंजेल्स की एक गरीब बस्ती में रहता है। वह स्कूल जाता है और बास्केट बॉल का बहुत अच्छा खिलाड़ी है।

वैलियेंट के घर की हालत अच्छी नहीं है। वे बहुत गरीब हैं उसके माँ-पिता और आसपास रहने वाले लोग भी बहुत तकलीफें सहकर अपने बच्चों को पालते हैं।

गरीबी और तंगहाली से परेशान होकर कई लड़के मोहल्लों के दादा किस्म के लोगों की गुण्डा-टोलिओं में शामिल हो जाते हैं। शायद उनके साथ रहने से डर और आतंक के सहारे आम लोगों पर जो रुतबा वो जमाते हैं, उसका एक नशा जैसा होता होगा।

पर वैलियेंट ऐसी किसी टोली का भागीदार नहीं है। न ही 12 साल का रॉबर्ट, जो वैलियेंट का पक्का दोस्त था।

वैलियेंट जान्स

एक दिन देर रात को वैलियेंट ने अपने घर के बाहर गोलियों की आवाज़ सुनी। फिर पुलिस के सायरन और हैलिकॉप्टरों की आवाज़ें आने लगीं। परिवार वालों ने दरवाज़े बन्द रखना ही ठीक समझा। पर अगले दिन सुबह वैल के दो दोस्त यह खबर लेकर आए कि पिछली रात की गोलीबारी में रॉबर्ट मारा गया था। उसकी गलती शायद सिर्फ इतनी-सी थी कि वह सड़क पर खड़े होकर एक और लड़के से बात कर रहा था जो किसी गैंग का सदस्य था। उसी समय एक और गैंग के कुछ लोग वहाँ आए और उन्होंने उस दूसरे लड़के के साथ ही रॉबर्ट को भी गोली मार दी।

रॉबर्ट के परिवार वालों के पास कफन लायक पैसे भी न थे। तब उसके सारे दोस्तों और बड़ों ने भी दिन भर लॉस एंजेल्स की सड़कों पर गाड़ियाँ धोकर पैसे इकट्ठे करके रॉबर्ट का अंतिम संस्कार किया। उस शाम सब लोगों ने हिंसा का विरोध करने के लिए एक मशाल जुलूस भी निकाला।

वैलियेंट कहता है, "मैंने कई लोगों की अन्तिम यात्राओं में भाग लिया है। पर रॉबर्ट की अन्तिम यात्रा मेरे लिए सबसे ज़्यादा दुखभरी थी। ताबूत खुला हुआ था। रॉबर्ट उसमें एक सूट पहने शान्ति से लेटा हुआ था। जब वह जाने लगा तो मैंने उसके गाल को छुआ। पहली बार मैं अपने को रोने से रोक नहीं सका।

अमरीका का राष्ट्रपति बहुत बड़ी चीज़ होगा। मेरे लिए तो माइकल जॉर्डन (बास्केट बॉल का जाना-माना सितारा) भी किसी राजा से कम नहीं। पर इन लोगों को यहाँ आकर हमारी सच्चाई का अनुभव करना चाहिए। मेरा दावा है कि वे यहाँ एक पूरा दिन गुज़ारना भी झेल नहीं पाएँगे।"

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार वाले जजों में वैलियेंट गुटों में बँटे शहरों में रहने वाले उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिन पर जानलेवा हिंसा के बादल हमेशा मँडराते रहते हैं।

तिल का ताड़ राई का पहाड़

एक राजस्थानी लोककथा

तो वक्त सबको अच्छे दिन दिखाए और समय पर ठीक अकल सुझाए कि किसी बेनाम गाँव के बाहर एक कबीले ने डेरा डाला। हट्टे-कट्टे लम्बे-तगड़े कई जवान। एक से बढ़कर एक। एक दिन कबीले का एक आदमी गुड़ लेने पंसारी के यहाँ पहुँचा। बोनी के समय सीधा-सादा ग्राहक आया देख पंसारी बहुत खुश हुआ। तीन बार में तीन से कम तौलना तो उसके बाएँ हाथ का खेल था।

गुड़ देखकर आदमी ने कहा, ''गुड़ तो बहुत गीला है।''

पंसारी तपाक से हँसकर बोला, ''बरसात का मौसम है न! नमक और गुड़ तो गीले होंगे ही। माल में खामी हो तो कहना।''

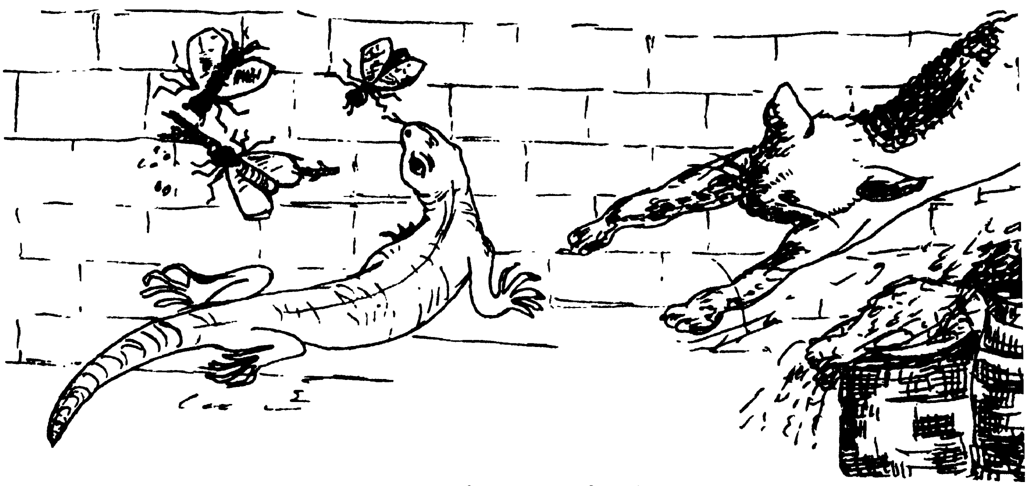

मोल-भाव से निपटकर पंसारी ने बोरी खोली और गुड़ तौलने लगा। वह आदमी तराजू की डांडी और पलड़ों को गौर से देख रहा था। पर उसकी क्या बिसात कि पंसारी की हाथ की सफाई ताड़ ले। तभी उसकी नज़र गुड़ पर चिपके एक तिनके पर पड़ी। एक तिनके से भला गुड़ की तौल में क्या फर्क पड़ता है? पर ग्राहक से रहा न गया, उसने तिनका उठाया और अंगुली के झटके से सामने फेंक दिया।

जहाँ गुड़ होगा वहाँ मक्खियाँ तो आएँगी ही! वे किसी न्यौते का इंतज़ार नहीं करतीं। इधर दीवार पर तिनके का चिपकना हुआ, उधर दो-तीन मक्खियाँ उसकी मिठास का मज़ा लेने लगीं। मक्खियाँ मिठास के आनन्द में डूबी थीं कि एक छिपकली एक झपाटे में दो मक्खियाँ निगल गई। तीसरी मक्खी उड़ गई। छिपकली दूसरी मक्खियों की ताक में दीवार पर अविचल बैठी थी। सहसा पंसारी की बिल्ली अपनी समाधि तोड़कर उस पर झपटी। छिपकली मक्खियों समेत उसके पेट में समा गई। बिल्ली को अपने शिकार के अलावा कुछ ध्यान न था।

कुत्ते और बिल्ली की दुश्मनी जाने कब से चली आ रही है। उस आदमी का कुत्ता इसी फिराक में था कि किसी तरह बिल्ली उसके हाथ लगे। उसने सीधे बिल्ली पर छलाँग मारी! पर यों पकड़ में आ जाए वह बिल्ली ही क्या! वह पलटकर बिजली की तेज़ी से दुकान में घुस गई। आगे बिल्ली और पीछे कुत्ता! उनकी भाग-दौड़ में कई बासन लुढ़क गए। कई मटकियाँ फूट गईं। बतासे, मिसरी, चीनी, मिर्च-मसाले, दालें बिखर गईं। तेल फैल गया। बैठे-बैठाए पंसारी का नुकसान हो गया। पंसारी ने अपना आपा भूलकर ज़ोर से एक बाट कुत्ते की ओर फेंका। निशाना तो उसका अचूक न था पर होनी कहें या संयोग कि वो सीधे कुत्ते के ललाट पर लगा। खून का फव्वारा छूट गया। अब उस आदमी को भी गुस्सा आया। खुद की चोट तो शायद वो बर्दाश्त कर लेता लेकिन अपनी जान से भी प्यारे कुत्ते के चेहरे पर खून देखकर उसका

खून खौल गया। उसने पंसारी को एक चाँटा जड़ दिया। पंसारी तौबा-तौबा मचाने लगा। पास के दुकानदारों ने उसका रोना-धोना सुना और अपनी-अपनी धोती सँभालते दौड़े चले आए।

इधर कुत्ता दौड़ा-दौड़ा कबीले गया और जवानों को बुला लाया। तू-तू मैं-मैं से बात बढ़ी और हाथापाई तक पहुँच गई। सैकड़ों लोगों की भीड़ उतर आई। इतने में किसी ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस आती देख कुछ लोग भागे और कुछ पकड़े गए। बात ही बात में गाँव की शान्ति भंग हो गई। पुलिस लोगों को ढूँढ-ढूँढकर पकड़ने लगी। काम-धंधा छोड़ लोग छिपने-छिपाने लगे।

गुड़ तौलने वाले पंसारी की दीवार पर तिनका अभी भी चिपका हुआ है। कुछ मक्खियाँ अभी भी मँडरा रही हैं। एक दूसरी छिपकली उनकी टोह में लार टपका रही थी।

एक छोटे से तिनके के कारण जितना फसाद हुआ, वह ही बहुत। आगे सबको सुमत मिले। कहानी थी तो खतम पैसे थे तो हज़म! ●●

सभी चित्र ● शोभा घारे

चित्र-पहेली

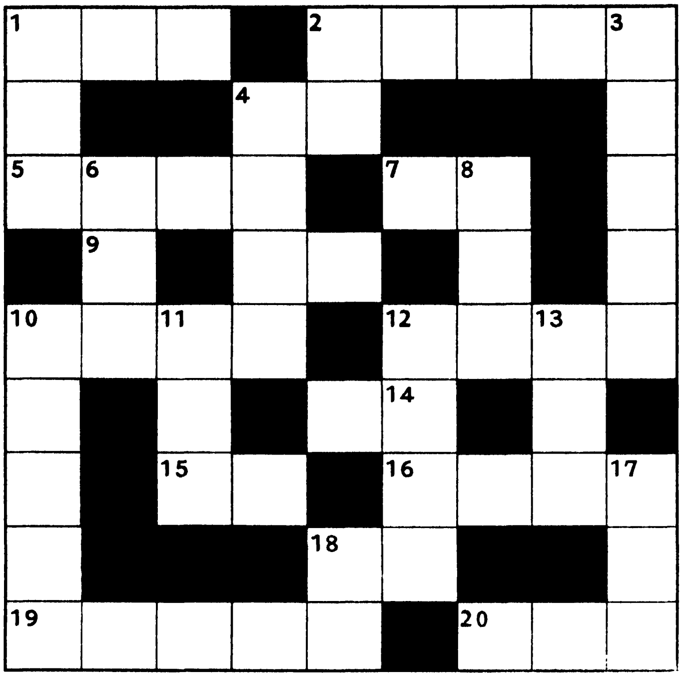

संकेत : बाएँ से दाएँ

1.

2.

4.

5.

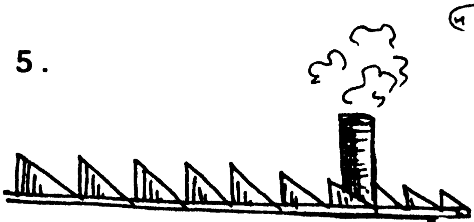

7.

9.

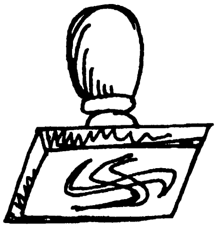

10.

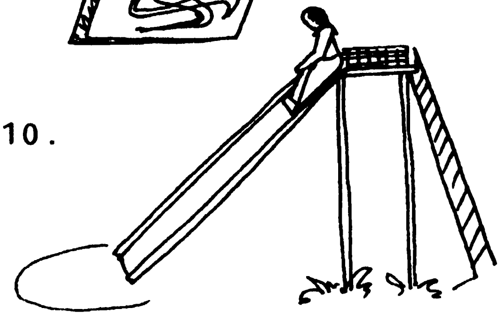

12.

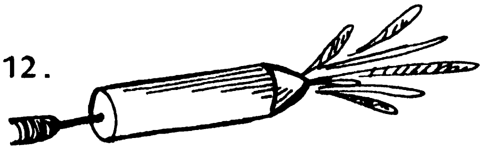

14.

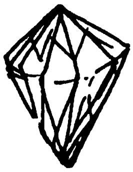

15.

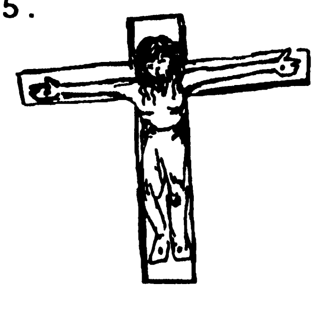

16

18.

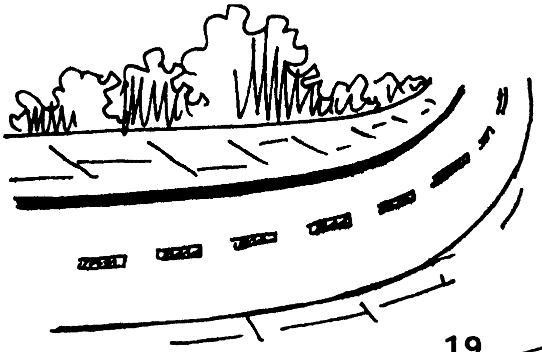

20.

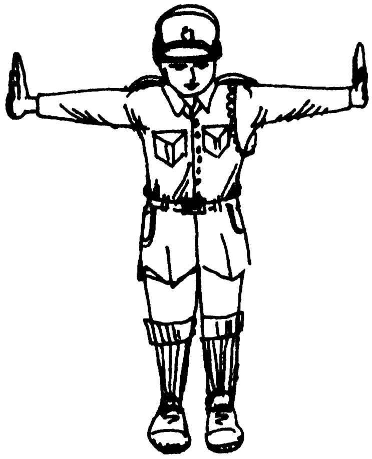

19.

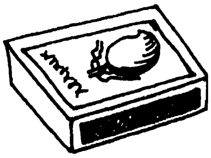

संकेत : ऊपर से नीचे

1.

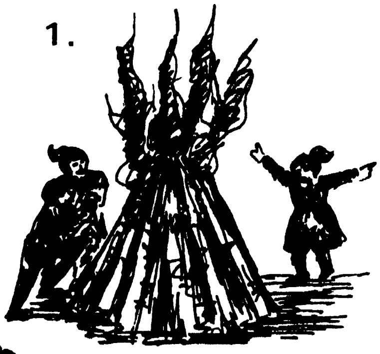

2.

3.

4.

6.

8.

10. किसी यात्रा की कहानी (5)

13. मिस्र की राजधानी (3)

11.

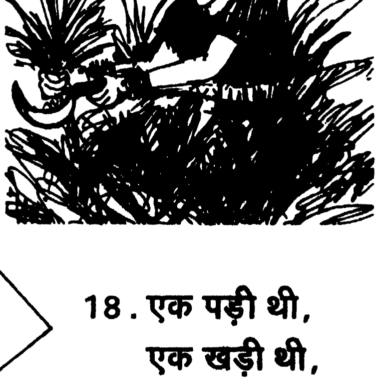

12.

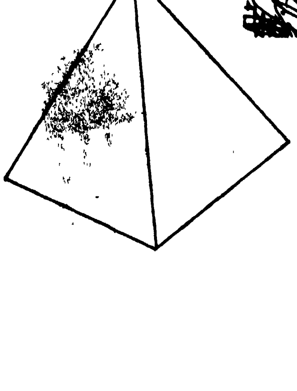

17.

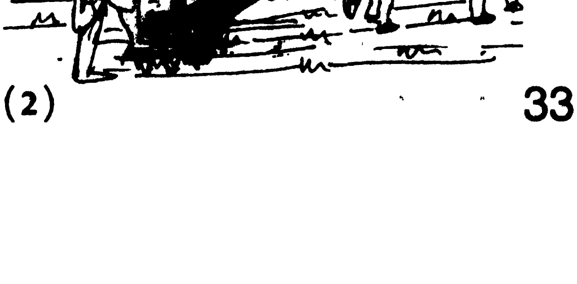

18. एक पड़ी थी,
एक खड़ी थी,
एक छमाछम नाच रही थी (2)

ताकत, कारक, जायज़

कितने ही ऐसे शब्द होंगे! इनकी खासियत यह है कि जिस अक्षर से ये शुरू होते हैं, उसी अक्षर से खत्म भी होते हैं। मसलन ताकत ही ले लो! ताकत त से शुरू होता है और इसका आखिरी अक्षर भी त ही है।

क्या तुम महज़ पाँच मिनिट में इसी तरह के पाँच शब्द और ढूँढ सकते हो?

चौबीस तीलियों से बनी है यह आकृति! इसमें एक जैसे नौ वर्ग हैं। बस तुम्हें इस आकृति से आठ तीलियाँ इस तरह उठाना है कि नई आकृति में भी कुल नौ वर्ग बचें।

क्या तुम्हें नीचे बनी इन दो तस्वीरों में कुछ फर्क नज़र आ रहे हैं? सीमा को इन दो तस्वीरों में आठ फर्क दिखे। और सना को दस। तुम भी ज़रा गौर से देखो कितने फर्क हैं इनमें?

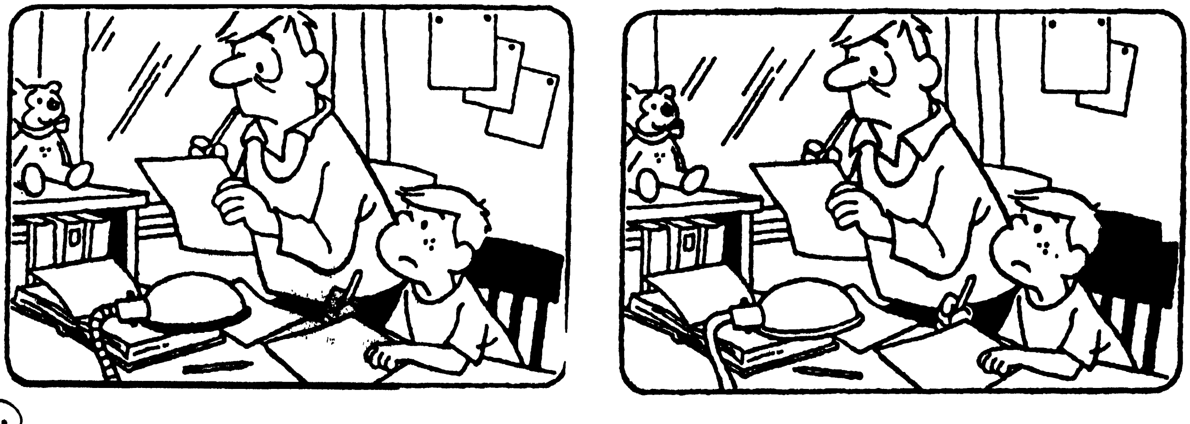

4

पेड़ तले खड़े इन महाशय की सूरत देखो! वरअसल वो ये सोच रहे हैं कि बिल्ली किस रास्ते से ऊपर पहुँची होगी। शाखों के जाल को देखकर क्या तुम उनकी मदद कर सकते हो ?

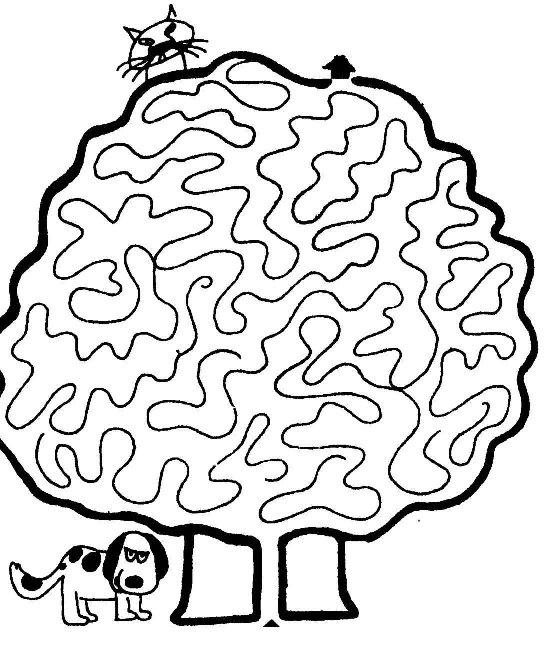

5

2 3

इन दो अंकों के बीच में एक गणितीय चिन्ह लगाने के बाद जो संख्या बनेगी वो दो से तो ज़्यादा होगी पर तीन से कम होगी! अंदाजा लगाओ?

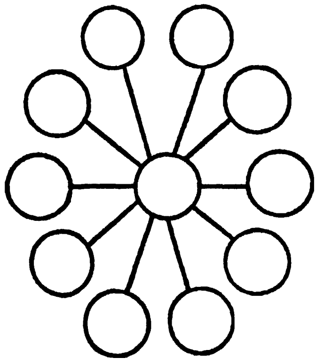

6

इस आकृति को देखो! इसमें पाँच सीधी रेखाओं के छोरों पर दो गोले बने हैं। और एक गोला बीच में बना है। तुम्हें एक से लेकर 11 तक की संख्या इन गोलों में भरनी है। हाँ, पर यह ख्याल रखना कि हर सीधी रेखा के गोलों की संख्या का जोड़ बराबर रहे।

7

इन चार हमशक्लों को देखो! इनमें से तीन तो हूबहू एक-से हैं। हाँ, एक कुछ अलग है। तो छानबीन करके बताओ कि कौन-सा एक अलग है?

गुलदस्ता

बच्चों को कहानियाँ पढ़ने में मज़ा आता है। खासतौर पर तब तो और भी ज़्यादा जब किसी कहानी में अपने परिवेश में घटने वाली विभिन्न घटनाओं को रोचकता के साथ बयाँ किया गया हो। इस तरह की कहानियाँ बच्चों को सहज ही आकर्षित करती हैं चूँकि इससे शायद बच्चे कहानी में वर्णित घटनाओं को अपनी ज़िन्दगी से जोड़कर देख पाते हैं। और इस तरह से बच्चे किताबों से एक रिश्ता बनाने में सफल हो जाते हैं।

कुछ ऐसा ही रमाकान्त शर्मा के बाल कहानी संग्रह 'गुलदस्ता' में दिखाई पड़ता है। संग्रह की पहली दो कहानियों में बड़ी खूबसूरती से ये दर्शाया गया है कि कैसे दो दोस्तों की नासमझी और बहकावे में आने की वजह से उनकी दोस्ती में खलल पड़ता है। बाद में अपनी गलतियों के पश्चाताप स्वरूप दोनों अपने-अपने दोस्तों से माफी माँगते हैं। इस तरह फिर ये दोस्त मिल जाते हैं। दोनों ही कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि गलती किसी से भी हो सकती है। महत्वपूर्ण है इसे स्वीकारने की हिम्मत जुटा पाना।

तीसरी कहानी एक बच्चे के अपराधबोध से जन्मी कहानी है। इसमें बताया गया है कि किस तरह बच्चे गलत काम करने की ओर आकर्षित होते हैं। परन्तु समय रहते ध्यान दिया जाए तो इन्हें इन गलतियों से बचाया जा सकता है। इस कहानी में शैलेश अपने दोस्तों को पतंग उड़ाते हुए देखता है तो उसके मन में ख्याल आता है कि क्यों न मैं भी पतंग उड़ाऊँ। लेकिन उसके पास पैसे नहीं होते। तब वह अपने पिताजी की जेब से पैसे निकालकर पतंग लेने चला जाता है। इतने में उनका नौकर रामू उसे देख लेता है और शैलेश को समझाता है। कुछ सोचकर शैलेश को अपनी गलती समझ आ जाती है और वह रामू का हाथ पकड़कर बोलता है, 'धन्यवाद रामू, आओ घर चलें'।

कुल मिलाकर तीनों ही कहानियाँ रोचक व एक बैठक में पढ़ी जाने वाली हैं। चंचल के चित्रों ने किताब को और भी खूबसूरत बना दिया है। बस, किताब की कीमत कुछ अखरने वाली है।

समीक्षा: दिनेश पटेल

किताब का नाम	**गुलदस्ता**
लेखक	**रमाकान्त शर्मा**
चित्रकार	**चंचल**
प्रकाशक	**ईशान प्रकाशन**
कीमत	**बीस रुपए**

पैसों का पेड़

शेखूजी ने अम्मा का नया गैस लाइटर चौपट कर दिया। हमने शेखूजी की तरफ देखा तो वे बोले गैस लाइटर चौपट थोड़े ही किया है, मैंने तो मच्छर मार बन्दूक बनाई है। उसे कैसे चलाया जाए ये समझना बड़ा कठिन था। शेखूजी ने समझाया – ये सेल तार से लगाया तो लाल बल्ब जलता है..... खतरे का निशान! फिर करंट इस आलपिन में आता है। जैसे ही मच्छर छुएगा.. चट-से मर जाएगा। उसने चींटी के साथ प्रयोग किया। सचमुच चींटी मर गई!

'शेखूजी फरमाते हैं' नामक कहानी का यह एक हिस्सा है। यह कहानी पैसों का पेड़ नाम के एक कहानी संग्रह से है। इस कहानी संग्रह में इस तरह की चार कहानियाँ हैं। इनमें से पहली दो बड़ी चिपकू हैं। चिपकू यानी एक बार शुरू करने के बाद पूरा पढ़ने से पहले तुमसे छोड़ा ही नहीं जाएगा। पढ़ने के दौरान कई बार हँसोगे और कई बार किसी और दुनिया में चले जाओगे।

दूसरी कहानी यानी पैसों का पेड़ कल्पना के इर्द-गिर्द घूमती है। और फिर खूब घूम-घामकर असल दुनिया में आती है। शायद यह तुम्हें सबसे ज़्यादा पसन्द आए। बाकी दो कहानियाँ भी उम्दा हैं। इनमें से एक मुम्बई से गोलू के गाँव आए एक नए लड़के की कहानी है। नाम है 'अजीब लड़का'! दोस्तों में कयास बाज़ियाँ होती हैं कि ये नया लड़का तो बस खिड़की पर बैठा-बैठा बाहर ताका करता है। इस नए लड़के से उन लड़कों की दोस्ती कैसे हुई, ये सब तुम कहानी में पढ़ना।

आखिरी कहानी है 'नन्ना नखरैल'। जैसा कि नाम से ही लगता है इसमें एक ऐसे लड़के की कहानी है जो बस वही करता है जो उसका मन करता है। उसका मन करता है कि वो नीली कमीज़ पहने तो वो नीली ही कमीज़ पहनता है। लेकिन आखिर में एक मज़ेदार घटना घटती है।

किताब में चित्र कुछ कम हैं लेकिन ठीकठाक हैं। इस किताब की लेखिका हैं मधु बी जोशी। तुमने शायद उनकी कुछ किताबें पहले भी पढ़ी होंगी। शायद वे उन गिने चुने लोगों में हैं जो तुम्हारे ज़्यादा करीब हैं। पढ़ो तो ज़रूर बताना कि शेखू और गोलू की जुगलबन्दी कैसी लगी!

समीक्षा: सुशील शुक्ल

किताब का नाम	**पैसों का पेड़**
लेखक	**मधु बी. जोशी**
चित्रकार	**चंचल**
प्रकाशक	**राजकमल प्रकाशन**
कीमत	**अठारह रुपए**

चकमक समाचार

तीन दिनी मेला

पिछले दिनों झाबुआ ज़िले की पेटलावद तहसील में बच्चों का एक तीन दिनी मेला आयोजित हुआ। यह मेला एक स्वयंसेवी संगठन सम्पर्क ने आयोजित किया। यह संस्था झाबुआ ज़िले में आदिवासी बच्चों के लिए अनौपचारिक रात्रिशाला भी चलाती है। खेल खेल में सीखने की सोच को लेकर हुए इस बाल मेले में लगभग दर्जन भर मज़ेदार गतिविधियाँ हुईं। विज्ञान के प्रयोग और मॉडलों के साथ-साथ मार्बल पेंटिंग, पहेलियाँ, गीत, कहावतें और वार्ता जैसी गतिविधियाँ भी हुईं। इसके अलावा पोषाहार, सिलाई और बटन टाँकना, बालों की कटिंग, सौर ऊर्जा उपकरण प्रदर्शनी आदि रोज़गार के लिए उपयोगी गतिविधियाँ भी इसमें हुईं।

मेले के दौरान बच्चों ने दो नाटक भी खेले। मेले का दूसरा दिन खेल कूद के नाम रहा। इसमें आटे की थाली में सिक्का ढूँढना, चम्मच दौड़, केला कूद जैसे करतब भी हुए। एक कठपुतली शो भी किया गया जिसमें **शासकीय स्कूलों की खराब स्थिति** दर्शाई गई। दो हास्य नाटक **'गुरू चेला'** और **'यमराज का दूत'** भी दूसरे दिन की गतिविधियों में शामिल थे।

मेले का आखिरी दिन बाल मेला सरपंच के चुनाव का दिन था। इस दिन पंचायत चुनाव की तर्ज़ पर बच्चों के बीच चुनाव हुआ। दोपहर में लड़कों और लड़कियों के दो पालों के बीच रस्सी खींच हुई। इस तरह मज़े-मज़े में खत्म हुआ तीन दिनी यह बाल मेला।

सुदामा के चावल का मंचन

पिछले महीने के आखिरी हफ्ते में मुम्बई के मशहूर पृथ्वी थियेटर में एक बाल नाट्य उत्सव हुआ। हर साल होने वाले इस उत्सव में अलग-अलग प्रान्तों की टीमों को आमंत्रित किया जाता है। इस बार दस टीमों ने शिरकत की।

ज़्यादातर हिन्दी और मराठी के नाटक खेले गए। खास बात यह कि इस बार होशंगाबाद ज़िले के कई गाँवों में चल रहे बाल समूहों की नाटक मण्डली को भी इस उत्सव में आमंत्रित किया गया।

बाल समूह ने हरिशंकर परसाई का मशहूर व्यंग्य नाटक **'सुदामा के चावल'** का मंचन किया। उनकी इस सधी प्रस्तुति को काफी सराहना मिली और उत्सव के अन्त में द्वितीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उसी मौके के कुछ चित्र यहाँ दिए हैं।

इस बेहतरीन प्रस्तुति का निर्देशन जॉनी कुट्टी ने किया था जबकि जया नर्गिस ने गीत संगीत की बागडोर सँभाली थी।

भवरदी बालमेला

भवरदी, हरदा ज़िले के खिरकिया तहसील का एक छोटा-सा गाँव है। फरवरी के आखिरी हफ्ते में यहाँ एक बालमेला हुआ। बालमेले में कुल इक्यावन बच्चों ने शिरकत की। पहले बच्चों ने बालमेला स्थल को रंगीन कागज़ और गुब्बारों से सजाया। इस बालमेले में चित्रकला, कविता, समूह खेल, मोनो एक्टिंग, ऑरिगेमी यानी कागज़ के खेल आदि गतिविधियाँ हुईं।

मेले में बच्चे सुबह दस बजे से शाम चार बजे तक अपने रंग में रहे। कागज़ के खेलों में टोपी, नाव और तितली जैसी चीज़ें बनाईं तो चित्रकला में उन्होंने जी भरकर अपने परिवेश को उकेरा। बैल चराते लोग, खेत में हल बक्खर से लेकर गाँव का ठेठपन, कुछ भी उनकी कूची से नहीं बच सका।

मोनो एक्टिंग में भी जमकर ठहाके लगे। बच्चे आते और अपनी पर्ची उठाते। पर्ची में जो लिखा होता उसकी नकल उतारनी होती थी उन्हें! किसी को बैलगाड़ी दौड़ानी पड़ी और किसी को नारियल फोड़कर दिखाना था...। चक्का चलाना और हज़ामत बनाने की नकल तक, एक से बढ़कर एक!

खेलों में बकरी शेर, रूमाल वाला खेल, अंधी भैंस अंधा ग्वाल और घोड़ा बादाम खाए, पीछे देखे मार खाए... जैसे गदुगुदे खेल खेलते बच्चों को अपनी सुध नहीं थी।

अंत में बालकिशन जी ने जलते हुए कपूर को मुँह में रखने जैसे कुछ करिश्माई खेल दिखाए और इनके पीछे छिपे रहस्यों के बारे में बताया।

रपट : योगेश मालवीय

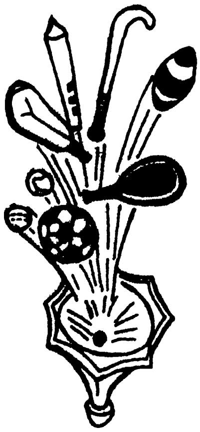

खेल समाचार

खेलों की दुनिया इन दिनों क्रिकेट से सराबोर है। आठ फरवरी से शुरू हुए इस क्रिकेट जमावड़े में दिन ब दिन रोमांच बढ़ता ही जा रहा है। पहले दिन ही अफ्रीका के धुरन्धरों को हराकर वेस्टइण्डीज़ की टीम फायनल की दौड़ में शामिल हो गई।
फिर एक और अनहोनी हुई.... केन्या के नौसीखियों ने आसमान नाप रहे श्रीलंकाइयों को जोर की पटखनी दे मारी। और सुपर सिक्स के रास्ते को और मुश्किल बना दिया। इधर अपने ग्रुप में इंगलैण्ड ने पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। और अगले दौर की दौड़ को कयासबाज़ियों से भर दिया।

फरवरी के आखिरी दिनों में ग्रुप ए से ऑस्ट्रेलिया अगले दौर में पहुँच गई है। भारत, पाकिस्तान, इंगलैण्ड और ज़िम्बाब्वे के बीच बाकी दो जगहों के लिए कशमकश जारी है। उधर दूसरे पाले में तीनों ही जगहों के लिए जद्दोजहद जारी है। अगले अंक के आने तक तो आखिरी फैसला भी हो चुका होगा। खैर!

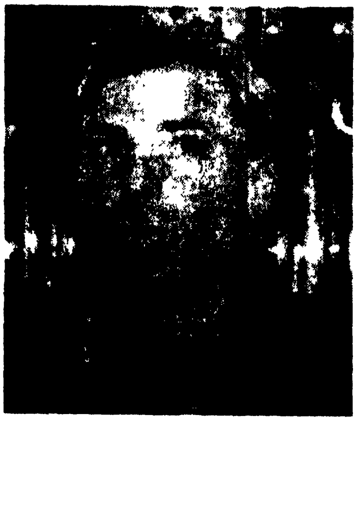

इस रोमांच के बीच क्रिकेट में एक अजीब घटना घटी। ऑस्ट्रेलिया के जाँबाज़ गेंदबाज़ शेन वार्न प्रदर्शनवर्धक दवाएँ लेने के दोषी पाए गए और उन्हें एक साल तक क्रिकेट की दुनिया से दूर रहने की सज़ा सुनाई गई है। क्रिकेट में ये पहला मौका है जब डोपिंग के बाद किसी क्रिकेटर को सज़ा मिली।

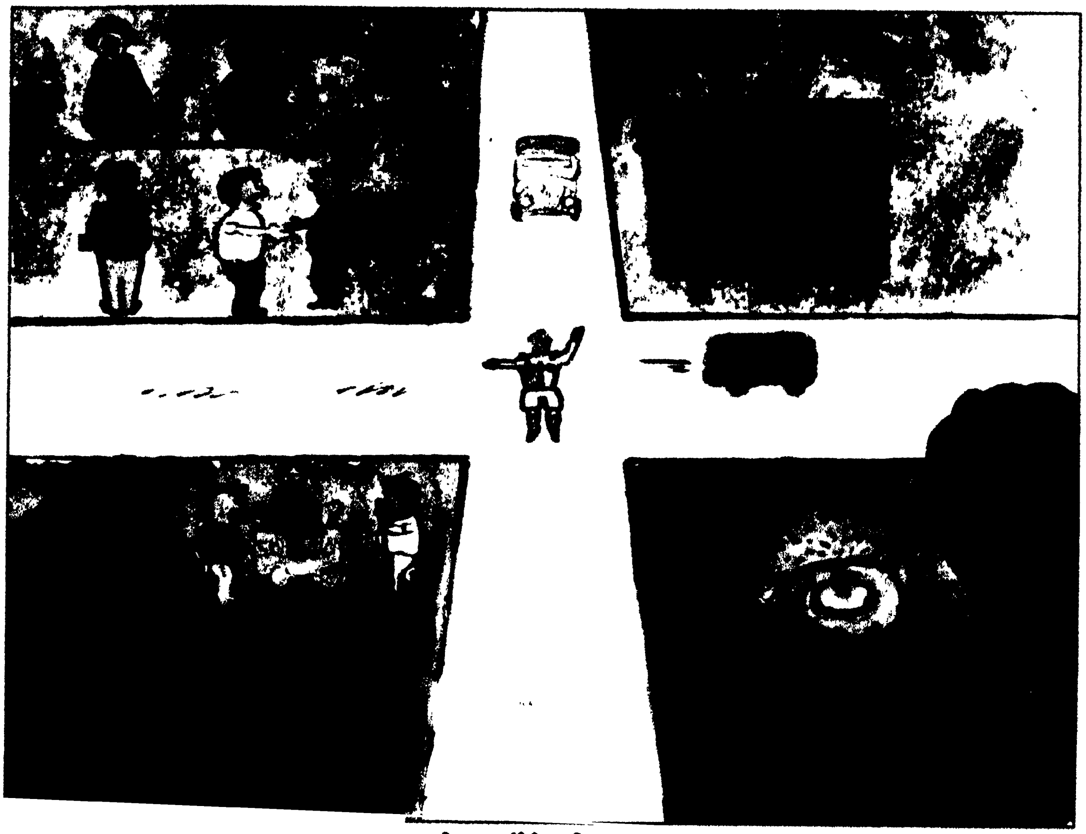

राजीव चतुर्वेदी, बलिया, उ.प्र.

शाहीना अली, सातवीं, धार, म.प्र.

125H1